कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

वर्षः११, अंकः०४, जनवरी–१२, इलाहाबाद

संरक्षक
बुद्धिसेन शर्मा

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल
09935959412

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
डी.पी.उपाध्याय, बलिया

सम्पादकीय कार्यालयः

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011
कानाफुसीः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचनाः

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

सभी सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि अगर पत्रिका का अंक आपको उक्त माह की 15 तारिख तक प्राप्त न हो तो कृपया हमें एक पोस्ट कार्ड से सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्रिका के कार्यालय को सूचित करें.

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

एक प्रतिः	रु0 10/–
वार्षिकः	रु0 110/–
पॉच वर्ष–	रु0 500/–
आजीवन सदस्यः	रु0 1100/–
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000/–

कश्मीर पूर्ण विलय के पश्चात पूर्ण एकात्मकता क्यों नहीं? 06

अत्र तत्र जनतंत्र ०८

आम आदमी की हड्डी पर कबड्डी क्यों? १०

स्थायी स्तम्भः

प्रेरक प्रसंग	०४
अपनी बात	०५
जानकारी	०८,०६
इतिहास	१२
समाज	१३
शख्सियत	१५
स्नेह बाल मंच	१६
एस.एम.एस रचना	०६,१२,१५,२८
महिला रचनाकार	२०
अहिन्दी भाषी रचनाकार–	२१
आध्यात्म	२४
युवा रचनाकार	२६
कहानीः भूख	२७
स्वास्थ्य	२६
लघु कथा	३०
दाउजी की डायरी	३२
चिट्ठी पत्री	३२
कविताएं–	२०,२२,२३,२८
साहित्य समाचार–	१७,१८२५,३०,३१
पुस्तक समीक्षा–	३३,३४

☞ समाज धन से नहीं आचरणों से महान होता है.

☞ देश की गरीबी धन नहीं चरित्र सुधरने से मिटेगी.

☞ सब मिलकर सबकी सेवा करें वही सच्ची समाज सेवा है.

☞ सत्य और सिद्धात पर दृढ़ रहना ही चरित्र है.

☞ सेवा को व्यवसाय नहीं व्यवसाय को सेवा बनाएं.

☞ जरुरतमंद को सहायता नहीं आत्म निर्भरता दें.

☞ कम से कम सत्ता प्रयोग ही सुशासन है.

☞ अहम की आयु दशाब्दी, सत्य की शाश्वती शताब्दी

☞ काम-वासना स्वाभाविक गुण है, यह कभी-कभी सीमा का अतिक्रमण करके मन की अवस्था को अस्त व्यस्त कर देती है. इसकी प्यास कभी-कभी इसे अन्धा कर देती है, परिणाम स्वरुप बुरा से बुरा कर बैठता है.

☞ वासना का नियन्त्रण करना भी अत्यावश्यक है, ऐसा न होने पर बुराई में डाल देती है. इसे बस में रखने के लिए सदा पवित्र विचार रखना, दूषित वातावरण से हटना आवश्यक है.

☞ दिन रात कल्पनाओं में डूबे रहना मानव का स्वभाव है. कितनी ही शुभ-अशुभ कल्पनाओं का यह सृजन करता रहता है. एक के बाद एक यही क्रम इसके जीवन में चलता रहता है. ऐसी कल्पनाओं में इसका मन कभी थकता नहीं हैं.

✍ दाऊजी

भ्रष्टाचार निवारण के तीन प्रमुख कारण

भारत वर्ष में भ्रष्टाचार का सबसे पहला कारण यहां का चुनाव प्रणाली है. चुनाव मत संकलन न होकर मत खरीदना हो गया है. इसके लिए धन-बल, जन-बल, बुद्धि-बल का प्रयोग किया जाता है. जो भी व्यक्ति चुनाव लड़ता है वह देश के हित में न सोचते हुए स्व-हित में सोचता है और कई तरह के हथकण्डे अपनाता है.

दूसरा कारण वर्तमान निर्वाचन प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन -पहला कदम चुनाव व्यक्तिगत खर्चे पर न होकर राष्ट्र के खर्चे पर सम्पन्न कराया जाना चाहिए और चुनाव व्यक्ति न लड़कर, दल लड़े. राष्ट्रीय पार्टिया अपना चुनावी एजेंडा देकर चुनाव लड़े. मतदान का जितना प्रतिशत उस दल को प्राप्त हो उस हिसाब से पहले से चयनित प्रत्याशियों को चयनित किया जाए. इससे बुद्धिजीवी वर्ग का व्यक्ति आगे आयेगा और बाहुबलियों से छुटकारा मिलेगा.

तीसरा कारण भ्रष्टाचार की गंगोत्री ऊपर से चलकर नीचे को बहती है. अगर ऊपर से गंदा पानी आ रहा है तो नीचे आप चाहे जितनी सफाई रक्खें वो गंदगी तो बनी रहेगी.

चौथा कारण आम आदमी न तो जन्म से भ्रष्ट होता है और न वो भ्रष्टाचार करना चाहता है, पर परिस्थितियां उसको ऐसा करने पर मजबूर करती हैं.

✍ **रामकृष्ण गर्ग**, सुप्रसिद्ध समाज सेवी एवं चितंक,
निकट हनुमान मंदिर, साकेत नगर, धूमनगंज, इलाहाबाद

वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा आखिर किसके हवाले?

हमारे वरिष्ठ नागरिक, जिन्हें हम विशिष्ट नागरिक, बुजुर्ग, पुरनिया के नाम से पुकारते/जानते हैं. आज सबसे अधिक असुरक्षित हैं. सामान्यतः यह देखने में आता है कि बच्चे शादी के बाद अपने परिवार को लेकर नौकरी पर चले जाते हैं. घर में बचते हैं बुजुर्ग पति-पत्नी. जो किसी तरह कुछ नौकरों के सहारे, कुछ किसी तरह दो रोटी पका कर खाते है, तो कुछ ऐसे हैं जिन्हें वो भी नसीब नहीं होता. उनकी सूध लेने न तो उनके बेटे आते हैं, और न ही सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय का दम्भ भरने वाली/ गरीबों की हितैशी सरकारें. यहां तक तो फिर भी गनीमत है. लेकिन उस पर से आये दिन लुटेरों, डकैतों द्वारा उनके घरों में घूसकर उनकी हत्या करना, घायल कर देना और सामान को लूट ले जाना. ऐसी घटनाएं आम हो गई. घायल होने के बाद बुजुर्ग दम्पत्ति के पास सब कुछ होते हुए भी मुंह में निवाला नहीं जा पाता. आये दिन ऐसी घटनाएं देखने सुनने को मिलती रहती है. उत्तर प्रदेश में पिछले वर्ष सभी थानों को यह निर्देश दिया गया था कि सभी वरिष्ठ नागरिकों की सूची बनाकर थानों में रक्खा जाए और उनकी सुरक्षा के लिए कारगर उपाय किए जाए. लेकिन उपाय तो बहुत दूर की बात हो गई अभी तक किसी थाने में वरिष्ठ नागरिकों की सूची तक नहीं तैयार हो पायी है.

अगर कोई वरिष्ठ नागरिक किसी पीड़ित के साथ व स्वयं पीड़ित थाने पर जाता है तो उपाय तो दूर उनकी बात सुनना उन्हें नागवार गुजरती है. उल्टे यह कहकर भगा दिया जाता है कि नेतागिरी करने आये हो, जाओ घर जाकर आराम करो यानि कोई सम्मान नहीं मिलता. अगर कोई वरिष्ठ नागरिक पहुंच वाला है तो अलग बात है. ऐसे में क्या हम यह मानकर चले कि हमारी व सरकार की नज़रों में बुजुर्ग किसी काम के नहीं है. उनकी रक्षा/देखभाल हम क्यों करे. लेकिन सरकार व युवा पीढ़ी को यह सोचना ही पड़ेगा कि इन्हीं बुजुर्गो के बदौलत हम आज जो कुछ भी है वह हैं. हम उनकी बदौलत ही इस संसार में है. कल हम भी बुजुर्ग होंगें.

आखिर लोकपाल बिल २०११ में लटक ही गया

पिछले ४३वर्षो में कई बार लोकपाल की बात चली लेकिन बात कभी नहीं बन पाई. इस बार वर्ष २०११ लोकपाल के दृष्टिकोण से काफी अहम रहा. चाहें केन्द्र में सत्तासीन सप्रग की सरकार जितना बड़बोलेपन बोले कि हमने पास करवाया, किया. इससे अन्ना व उनकी टीम का कोई फैक्टर नहीं था लेकिन यह भी कटु सत्य है कि इस लोकपाल बिल के पास होने में अन्ना हजारे के अनशन ने सबसे अहम भूमिका अदा की. लेकिन अन्ना व अन्ना टीम की अतिवादिता/हठधर्मिता ने इसे कुछ कमजोर बनाने में भी मदद की. ऐसे जनपयोगी बिलों को तैयार करने, इसकी सभी पहलुओं पर गौर करने के लिए पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है. इसे तैयार करने के लिए थोड़ा वक्त दिया जाना चाहिए.

खैर जो भी हो सप्रंग सरकार ने लोकसभा में पास तो किया चाहें इसका श्रेय कोई ले लेकिन मुख्य भूमिका तो केन्द्र सरकार की रहीं. हमेशा में अन्ना के निशाने पर रही कांग्रेस के लिए यह एक बहुत बड़ी चुनौती थी. जिसे उसने पूरा किया. इसके लिए केन्द्रीय सप्रग सरकार को बधाई दिया जाना चाहिए. कमिया तो हमेशा रहती है. लोकतंत्र में कोई नियम/काननू कभी पूर्ण नहीं होते. सबसे महत्वपूर्ण यह है कि कानून बने. अगर अण्णा टीम को यह पसंद नहीं है तो वह जैसा कि पहले ही कह रही है कांग्रेस के खिलाफ प्रचार करेगें. तो करें, और अगर जनता उसकी प्रिय पार्टी को वोट देकर केन्द्र में सरकार बनवाती है तो उसमें अपने हिसाब से संशोधन करवाकर जो चाहें वो प्राविधान डलवा लेगें. क्यों इतने परेशान है. और अगर जनता ने कांग्रेस का साथ दिया तो आगे आप खुद ही समझदार है.

केन्द्र सरकार को लोकसभा में बिल पास करवाने के लिए बहुत-बहुत बधाई.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कश्मीर पूर्ण विलय के पश्चात पूर्ण एकात्मकता क्यों नहीं ?

✍समाज प्रवाह, मुंबई

महाराजा का विलय पत्र (२६ अक्टूबर १९४७), लार्ड माउंटबेटन की स्वीकृति (२७ अक्टूबर १९४७), भारत का संविधान-१९५३, इंदिरा शेख समझौता-१९७५ एवं भारतीय संसद का सर्वसम्मत प्रस्ताव १९९४ सभी प्रमाणित करते हैं कि जम्मू-कश्मीर का भारत में विलय पूर्ण एवं अतिम हैं.

कांग्रेस की परम्परागत मुस्लिम तुष्टीकरण की देशघातक, राजनति, नेशनल कांफ्रेंस/पीडीपी की भारत विरोधी मानसिकता और कश्मीर में सक्रिय अलगाववादी संगठनों की पाक-परस्ती के कारण पिछले ६३ वर्षो से जम्मू-कश्मीर में देश द्रोह पनप रहा है. परिणामस्वरुप आज कश्मीर घाटी में भारत राष्ट्र लुप्त हो रहा है. भारत के राष्ट्रीय ध्वज को जलाना, संविधान को फाड़ना और पाकिस्तान समर्थक नारे लगाना आम बात हो गई हैं. जम्मू-कश्मीर के भारत में हुए पूर्ण एवं अतिम विलय को अमान्य करके भारत की संसद का अपमान किया जा रहा है. जम्मू-कश्मीर को विवादित क्षेत्र मानने और भारतीय सेना की वापसी की मांग करके पाकिस्तान के जन्मजात इरादों को पूरा का षडयंत्र रचे जा रहे हैं.

> मुस्लिम तुष्टीकरण की राजनति, नेशनल कांफ्रेंस/पीडीपी की भारत विरोधी मानसिकता और कश्मीर के अलगाववादी संगठनों की पाक-परस्ती के कारण जम्मू-कश्मीर में देश द्रोह पनप रहा है.
>
> जम्मू-कश्मीर रियासत के भारत में विलय का प्रस्ताव २७ अक्टूबर १९४७ को भारत के गर्वनर जनरल द्वारा स्वीकृत कर लिया गया था.

पूर्ण विलय एक ध्रुव सत्य

इतिहास साक्षी है कि जम्मू-कश्मीर के शासक महाराजा हरि सिंह ने २६ अक्टूबर, १९४७ को एक विलय पत्र पर हस्ताक्षर करके उसे भारत सरकार के पास भेज दिया. 'अब मैं श्रीमान राजराजेश्वर महाराजाधिराज श्री हरि सिंह जम्मू-कश्मीर तथा तिब्बत आदि देशाधिपति, जम्मू-कश्मीर राज्य का शासक, अपने उक्त राज्य में और उसके ऊपर अपनी प्रभुसत्ता का उपयोग करते हुए एतद द्वारा भारत अधिराज्य के विलय हेतु अपने इस लिखित विलय पत्र को कार्यान्वित करता हूं.

इस प्रकार महाराजा द्वारा जम्मू-कश्मीर रियासत का भारत में विलय प्रस्ताव रखा गया और फिर २७ अक्टूबर १९४७ को भारत के गर्वनर जनरल द्वारा इसे निम्नलिखित पत्र द्वारा स्वीकृत कर लिया गया.

इस पूर्ण विलय के पश्चात भारत की सरकार, जम्मू-कश्मीर की सरकार, पाकिस्तान और पाक अधिकृत कश्मीर की राजसत्ता को जम्मू-कश्मीर के भारत में हुए विलय पर प्रश्नचिन्ह लगाने का कोई अधिकार नहीं है. इस तरह की असंवैधानिक बातों से महाराजा हरिसिंह द्वारा किए गए विलय प्रस्ताव का निरादर एवं भारत अधिनियम १९४७ का भी उल्लंघन होता है. इस अधिनियम के अन्तर्गत भारत की रियासतों के राजाओं को ही विलय के अधिकार दिए गए थे. रियासत की जनता के लिए आत्मनिर्णय के अधिकार की बात नहीं कही गई थी. २६ जनवरी १९५० को भारत का संविधान लागू हुआ. इस संविधान में भी जनमत संग्रह अथवा आत्म निर्णय जैसे उपक्रमों, जैसा कोई प्रावधान नहीं है.

इस प्रकार भारत की सरकार को भी इस प्रकार के उपक्रम की बातें करने का कोई अधिकार नहीं. जब भारत के संविधान निर्माताओं ने भारत की सरकार को जनमत संग्रह अथवा विलय पर पुनर्विचार का अधिकार नहीं दिया तो किसी अंतरराष्ट्रीय संगठन, दूसरे देश अथवा स्वयं जम्मू-कश्मीर में सक्रिय अलगाववादी संगठनों को भारत के संदर्भ में इस प्रकार की बात करना तो पूर्ण रूप से असंवैधानिक है.

राज्य की जनता द्वारा स्वीकृत

जम्मू-कश्मीर की जनता द्वारा चुनी गई संविधान सभा ने भी १७ नवम्बर, १९५३ को जम्मू-कश्मीर के भारत में विलय की पुष्टि कर दी तो सारा विवाद स्वतः समाप्त होना जाना चाहिए था. इस पुष्टि के पश्चात तो पाकिस्तान की सरकार एवं सुरक्षा परिषद को भी जम्मू-कश्मीर के संबंध में कुछ भी कहने और करने का अधिकार नहीं रहता.

जिस प्रदेश की जनता के लिए इस तरह के जनमत संग्रह की बात हुई थी, और हो रही है, उसी जनता द्वारा

मुद्दा

चुनी गई संविधान सभा ने जम्मू-कश्मीर के भारत में हुए विलय को मान लिया. इस संविधान सभा द्वारा बनाए गए जम्मू-कश्मीर के अपने संविधान की धारा-४ इस प्रकार है-इस प्रदेश जम्मू-कश्मीर की सीमाओं में वह सारा क्षेत्र रहेगा जो १५ अगस्त १९४७ को इस प्रदेश के राजा के अधीन था. उल्लेखनीय है कि १५ अगस्त को तो पाक अधिकृत कश्मीर भी रियासत के महाराजा के अधीन था. स्पष्ट है कि सारा जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है. महाराजा ने इसी अखंडित कश्मीर का विलय भारत में किया था. इसलिए पाकिस्तान का कश्मीर की एक इंच धरती पर बने रहना, यह भारत का आक्रमण माना जाएगा. अतः पाकिस्तान द्वारा कश्मीर घाटी के एक हिस्से को बलात् अपने कब्जे में रखना भारत पर सीधा हमला है. सारा संसार इस सच्चाई को जानता है.

जम्मू-कश्मीर के संविधान की जिस धारा चार में इस प्रदेश को भारत का अभिन्न भाग माना गया है. इसे भी इसी संविधान की धारा-१४७ ने सुरक्षात्मक कवच पहना दिया है. इसके अनुसार धारा चार को निरस्त नहीं किया जा सकता. अब तो सुरक्षा परिषद को भी भारत को दिशा निर्देश देने का कोई अधिकार नहीं बचता. सुरक्षा परिषद केवल पाकिस्तान को भारतीय क्षेत्र खाली करने की सलाह दे सकती है. और अगर पाकिस्तान ऐसा नहीं करता है तो उसके विरुद्ध प्रस्ताव पारित करके, अन्य देशों को पाकिस्तान के साथ राजनीतिक संबंध तोड़ने को कह सकती है. परंतु सुरक्षा परिषद स्वयं राजनीतिक शक्ति गुटों का एक अखाड़ा मात्र है. इसलिए इस बलहीन अंतरराष्ट्रीय संगठन से कोई भी उम्मीद रखना बुद्धिमत्ता नहीं होगी. पाक अधिकृत कश्मीर को वापिस लेने और संपूर्ण जम्मू-कश्मीर की भारत के साथ पूर्ण एकात्मता के लिए भारत को जो भी करना है वह अपने बल पर ही करना है.

सुरक्षा परिषद द्वारा मान्यताः

उल्लेखनीय है कि ४ फरवरी १९४८ को सुरक्षा परिषद में अमेरिका के प्रतिनिधी ने एक वक्तव्य इस प्रकार दिया था, जम्मू-कश्मीर का बाह्य अधिपत्य अब महाराजा के नियंत्रण में नहीं है. जम्मू-कश्मीर के भारत में विलय के साथ यह अधिकार भारत के पास आ गया है. इसी अधिकार के नाते भारत ने यह मुद्दा यहां रखा है. इस तरह सुरक्षा परिषद ने भी पूरे भारत जम्मू-कश्मीर को भारत का हिस्सा स्वीकार किया है.

सुरक्षा परिषद ने युद्ध विराम रेखा (वर्तमान में नियंत्रण रेखा) के दोनों ओर संयुक्त राष्ट्र संघ के पर्यवेक्षक तैनात कर दिए. तत्पश्चात एक प्रस्ताव के माध्यम से पाकिस्तान को अपने सैनिकों, नागरिकों और कबाइलियों को कश्मीर से हटा लेने को कहा गया. इस प्रस्ताव से संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी पाकिस्तान को हमलावर घोषित करके भारत के अभिन्न अंग जम्मू-कश्मीर की सुरक्षा के पक्ष को स्वीकार कर लिया. परंतु पाकिस्तान और कश्मीर में सक्रिय पाकिस्तान समर्थकों ने इस प्रस्ताव को आज तक नहीं माना. स्पष्ट है कि सुरक्षा परिषद के प्रस्तावों की दुहाई देकर जम्मू-कश्मीर में जनमत संग्रह का शोर मचाने वाले लोग, दल और देश उन प्रस्तावों को ठुकरा देते हैं, जिनमें पूरे जम्मू-कश्मीर के भारत में पूर्ण एवं अंतिम विलय की बात कही गई हैं.

अब तो हमें चेतना चाहिए.....

सिन्धु महानदी और सिन्धु घाटी सभ्यता बहुत प्रचीन है. जब सिकन्दर भारत-तट पर आया तो उसने सिन्धु नदी का उच्चारण हिण्डूज किया. बाद में जब तुर्क, अरब आदि आये तो उन्होनें सिन्धु महानदी को हिन्दू दरिया, वहाँ के निवासियों को भी हिन्दू, उनकी मिश्रित भाषा को हिन्दी की तथा देश को हिन्दुस्तान नाम दिया. बाद में जब अंग्रेज आये तो उन्होंने सिन्धु महानदी को इण्डस रिवर, वहाँ के निवासियों को इण्डियन, देश को इण्डिया और भाषाओं को वरनाक्यूलर्स नाम दिया तथा इन्हें देश-विदेश में प्रचलित कर दिया. अंग्रेजी भाषा को रोजी-रोटी से जोड़ दिया. भाषा संस्कृति की वाहिनी होती है. मानसिकता बदलती गयी. अंग्रेजियत बढ़ती गयी.

बहुत देर हो चुकी है, अब तो हमें चेतना चाहिए. विदेशियों के दिये नामों का बहिष्कार करना होगा. अच्छा होगा यदि सरकार इनके प्रयोग निषिद्ध कर दे. हमें देश भारत, निवासियों को भारतीय तथा भाषा को भारती कहना चाहिए. इन नामों को ही देश-विदेश में पूर्ण आस्था एंव उत्साह से प्रचलित-प्रसारित करना चाहिए. राष्ट्रभाषा भारती में सभी विषयों की पाठ्य पुस्तको विधी-विधानों का अनुवाद होना चाहिए ताकि शिक्षा केंद्रों, कार्यपालिका, न्यायपालिका, सदनों में उसका प्रयोग सुविधापूर्वक किया जा सके. इससे देश में साम्प्रदायिक विवाद घटेंगे और सद्भाव संगठन बढ़ेगा. इस प्रकार हम अपने राष्ट्र प्रेम को प्रमाणित कर सकते हैं.

सर्व प्रथम हम भारतीय है। राष्ट्रप्रेम सर्वोपरि है।

कवि रामनरेश त्रिपाठी की ये पंक्तिया बड़ी प्रेर्णामयी है।

"देशप्रेम वह पुण्य क्षेत्र, अमल असीम त्याग से विचलित,
आत्मा के विकास से जिसमें, मनुष्यता होती है विकसित।।"

✍ **राजन चौधरी,** पत्रकार

अत्र तत्र जनतंत्र

✍हितेश कुमार शर्मा, बिजनौर, उ. प्र.

काश्मीर समस्या पिछले ६१ वर्षो से क्यों लम्बित है. बार-बार बात होती है और फिर लम्बित मुकदमें की तरह बातचीत के लिए पुनः तारीख लग जाती है. हल कोई नहीं निकलता. यदा-यदा इस समस्या का समाधान पाकिस्तान ने हमले करके ढूंढने की कोशिश की है और भारत जिन्दाबाद यह जीतकर भी पुनः सन्धि प्रस्ताव और बातचीत की दुहाई देने लगता है. अगर एक बार भी पाकिस्तान जीत गया होता तो शायद यह समस्या समाप्त हो जाती, क्योंकि पाकिस्तान जीतने के बाद पुनः लौटने की बात कभी सोच ही नहीं सकता. हम ६० हजार सैनिकों को हिरासत में लेने के बाद भी फिर बातचीत का सहारा लेते है. अगर उन ६० हजार सैनिकों के बदले में पाकिस्तान से काश्मीर समस्या का सौदा किया जाता तो फैसला हमारे पक्ष में होता, लेकिन हम आदर्शवादी बनते है और पूरे संसार को अपनी धर्मनिरपेक्षता दिखाने के लिए और स्वयं को अहिंसावादी सिद्ध करने के लिए प्रत्येक आतंकवादी को बिरयानी मक्खन, मुर्गे खिलाकर पालते है और उन्हें उनके दुष्कर्मों की सजा नहीं देते। करोड़ों रूपये अब तक इस संदर्भ में खर्च हो चुके है. कभी हमारे प्रधानमंत्री बात करते है कभी विदेश मंत्री बात करते है, विदशी सचिव बात करते है, दौरे और भत्ते के खर्चे बढ़ते जाते है, नतीजा टाँय-टाँय फिस होता है. जितना खर्चा हमने बातचीत पर किया है और जितना खर्चा हम लगातार काश्मीर पर कर रहे है, वह यदि जोड़ा जाये तो एक नये काश्मीर बनाया जा सकता है. हम गम्भीर भी नहीं है, काश्मीर समस्या के हल के लिए, क्योंकि यदि यह हल हो गई तो हमारे नेताओं की विदेश सचिवों की बातचीत का, दौरे भत्ते का पंच सितारा होटलों में ठहरने का सभी खर्चा मारा जायेगा. हलवा पूरी जब तक इस बहाने से चलता है, चलना चाहिए। वैसे भी भारत की जन्म कुण्डली में लिखा है कि बातचीत करते हरो। समस्या का समाधन मत करो, वरना भारत वर्ष की प्रगति रूक जायेगी। इसलिए काश्मीर समस्या पर वार्ता, विफलता, पुनः वार्ता, पुनः विफलता का नाटक बदस्तूर चल रहा है और चलता रहेगा जब तक हमारे संसाधनों पर पहला हक अल्पसंख्यकों का रहेगा। हम कितने बहादुर हैं। काश्मीर को अपना कहते है, काश्मीर को अपना सम्मान कहते है। अपना गौरव कहते है और वहां से धारा-३७० नहीं हटा सकते। बल्कि और अधिक स्वायतत्ता देने पर विचार कर रहे है। वहां के निवासियों को जो कभी भी हमारे नहीं हो सकते भारत वर्ष की गरीब जनता का पेट काटकर कम मूल्य पर वस्तुएँ उपलब्ध कराई जाती है, भले ही भारत वर्ष की गरीब जनता भूखमरी से तंग आकर आत्म हत्या कर लें, किन्तु काश्मीर में जनता को कोई तकलीफ नहीं होनी चाहिए, क्योंकि वहां केवल अल्पसंख्यक रहते है, जिनका प्रत्येक संसाधन पर पहला अधिकार है. सम्भवतः हम प्रतीक्षा कर रहे है उस घड़ी की जब अल्पसंख्यक दिल्ली पर अपना पहला अधिकार जमा देंगे.

यही स्थिति प्रयास और प्रयास की पोलियों के बारे में है। हम अरबों रूपया खर्च कर चुके है, लेकिन भारत वर्ष से पोलियो मिटने का नाम नहीं ले रहा. कही तो पोलियो की दवा पिलाने वाली टीम का बहिष्कार किया जाता है और कहीं पर उनसे मारपीट भी कर दी जाती है। यह मारा दुर्भाग्य है कि रोटरी अर्न्तराष्ट्रीय का अरबों रूपया खर्च होने को बाद भी हम जहाँ के तहाँ है। इतना अवश्य हुआ है कि पांच सितारा होटलों मेकं बड़ी-बडी सभाएँ हुई हैं। खाने-पीने के दौर चले है। आने-जाने के भत्ते दिये गये है और पोलियों उन्मूलन पर गर्दन हिला हिलाकर विचार किया गया है। यह किसी ने नहीं सोचा कि पोलियो का वायरस जन्म कैसे लेता है और किस प्रकार फैलता है. इसकी जड़ कहां पर है, यदि जड़ पर विचार कर लिया जाता है जड़ पर प्रहार किया जाता तो पोलियो मिट जाता. यदि घर-घर दवायें पिलाने के स्थान पर सरकारी क्लीनिक पर मुफ्त दवा वितरण का प्रबन्ध होता तब भी पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम सिद्ध हो सकता था। लेकिन जब जबरदस्ती की जाती है तो आदमी यह सोचता है कि यह जबरदस्ती दवा पिलाने की क्यों की जा रही है। वह पोलियो उन्मूलन को भूल जाता है और नये-नये अर्थ तलाशने लगता है। स्वयं दवा पीने की इच्छा का जागृत होना और स्वयं बूथ पर दवायें पीने जाना महत्वपूर्ण है. जबरदस्ती दवा पिलाने के लिए घर-धर पोलियों की दवा का डिब्बा लेकर जाना लोगों के मन में सन्देह उत्पन्न करता है। उलेमाओं के बयान हुए। पण्डितों के बयान हुए। विश्वविधालय के कुलपतियों को बुलाया गया। फिल्मी सितारों को बुलाया गया। क्रिकेटरों को अवतरित कराया गया, किन्तु जनता पर कोई प्रभाव नहीं हुआ, क्योंकि जनता जानती है कि जिन लोगों ने भी पोलियों उन्मूलन हेतु दवा पीने के समर्थन में बयान दिये है, वह किसी न किसी कारण ऐसे बयान देने को बाध्य थे। पोलियों उन्मूलन कार्यक्रम तब तक समाप्त/सफल नहीं होगा, जब तक इस कार्यक्रम के लिए

मुद्दा

अरबों रूपया उपलब्ध रहेगा। ईश्वर से प्रार्थना है कि इस कार्यक्रम के आयोजकों को सदबुद्धि दें और इस उन्मूलन कार्यक्रम पर जो धन का उन्मूलन हो रहा है, वह थम सके।

काश्मीर समस्या अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है। पोलियों की समस्या राष्ट्रीय समस्या है, किन्तु पोलिथीन का प्रयोग स्थानीय समस्या है। हम कितने महान है कि हम पोलीथीन को भी प्रतिबन्धित नहीं कर सकते। जानते है कि पोलीथीन की थैलियों में लाया गया सामान जल्दी खराब हो जाता है। स्वास्थ्यप्रद भी नहीं है, फिर भी पोलीथीन की थैलिया प्रचलित है। हम जानते है और हमें साफ दिखाई देता है कि पोलीथीन की थैलियों के कारण नालियों में पानी रूक जाता है। नालिया बन्द हो जाती है। पानी सड़ने लगता है और भिन्न -भिन्न बीमारियों को पैदा करने वाले मच्छर भिन-भिनाने लगते है। लेकिन हम सब कुछ बर्दाश्त कर सकते है, किन्तु पालीथीन की थैलियां बनाने बाले लोगों को नाराज नहीं कर सकते क्योंकि जिसने पोलीथीन की थैली बनाने का लाईथीन के विष से प्रभावित हो। पोलीथीन की थैलिया भले ही सारा वातावरण विषाक्त कर दें। पोलीथीन की थैलियों में भरकर डाला गया बचा कुचा खाना खाकर भले ही जानवर सड़कों पर दम तोड़ दें। लेकिन उन चन्द लोगों को नाराज करना जो पोलीथीन की थैलिया बनाते है। शायद देशहित में नहीं हैं। हम काश्मीर की समस्याहल करने की बात करते है। हम पोलियों उन्मूलन के लिए प्रयासरत, है। किन्तु हम पोलीथीन की थैलियों को प्रतिबन्धित नहीं कर सकते। हम किस मूँह से देश की अन्य समस्याओं को हल कर सकते है। जाने वह दिन कब आयेगा। जब देश में ऐसे नेता उत्पन्न होगें जो देशहित की बात सोचेंगे। क्रिकेट खेलने की नहीं।

एमआरपी से अधिक लिया तो होगा जुर्माना

किसी वस्तु को बनाने में आने वाला खर्च, डीलर कमीशन, विज्ञापन खर्च व सभी प्रकार के टैक्स जोड़ कर एमआरपी बनता है. इससे अधिक पर किसी वस्तु को नहीं बेचा जा सकता है. यदि कोई दुकानदार आपको एमआरपी से ज्यादा पर कोई वस्तु बेचता है तो उस पर पैकेज कमोडिटी रूल १९७७ के अंतर्गत कार्यवाही हो सकती है. इसकी शिकायत कंट्रोलर डिपाटमेंट वेट एंड मेजर्स को लिख कर की जा सकती है. याद रहे कोई भी वस्तु खरीदने पर उसका बिल जरूर ले लें. बिल के बिना आपको यह साबित करना बहुत मुश्किल होगा कि विक्रेता ने आपसे अधिकतम खुदरा मूल्य से अधिक पर कोई वस्तु बेची है. बिना रसीद के आप के लिए किसी भी फोरम में शिकायत कर पाना भी संभव नहीं होगा. आप एमआरपी से अधिक मूल्य पर उत्पाद बेचने पर राज्य उपभोक्ता फोरम में शिकायत कर सकते हैं. इसके पश्चात राष्ट्रीय उपभोक्ता आयोग में शिकायत की जा सकती है. गौरतलब है कि यदि दुकानदार से एमआरपी पर मोलभाव किया जाए तो भी कुछ छूट प्राप्त की जा सकती हैं. किसी बड़े होटल या शापिंग माल में भी एमआरपी से अधिक मूल्य पर कोई वस्तु नहीं बेचा जा सकता है.

आप अपनी शिकायतें निम्न वेबसाइटों के जरिए भी कर सकते हैं.-
www.fcamin.nic.in, cwmd@nic.in

एस.एम.एस.रचना

भारत पर अब शासन किया जा रहा है-**अम्मा** दक्षिण में, **बहन जी** उत्तर में, **दीदी** पूर्व में, **आंटी** राजधानी में, केन्द्र में **मैंडम**, राष्ट्रपति भवन में **ताई** और घर में **पत्नी**

मो०९४५०४५०२९३

भ्रष्ट व्यवस्था का हमें यदि करना है अंत मन वाणी से करम से, बनना होगा संत **विमल कुमार वर्मा,**
९४५०४५०२९३

++++++++++++++++++++++++++

सरदार स्कूल अपने बच्चे लेने गया सरदार-मैंडम जी हमें बच्चे कब देगी आप?
मैडम बड़े प्यार से-सरदार जी, 'पीरियड' खत्म होने तक तो इंतजार करो.

++++++++++++++++++++++

संता-यार मुर्गी के बच्चे अंडा तोड़कर बाहर कैसे आ जाते है
बंता-मुझे जो ये समझ में नहीं आता बड़े अंडे में घूस कैसे जाते है

++++++++++++++++++++++

उल्फत का यही दस्तूर होता है
जिसे चाहो वही अपने से दूर होता है
दिल टूटकर बिखरता है इस कदर जैसे
कोई कांच का खिलौना, चूर चूर होता है

++++++++++++++++++++

इक शराबी रोज शिव मंदिर मे सर टेकता था, इक दिन पुजारी ने शिव की जगह, गनेश की मुर्ती रखा दी. ...शराबी आया और बोला-छोटू पापा से बोलना अंकल आये थे.

++++++++++

बेवजह किसी को सताया नहीं करते।
यूं ही किसी को तड़पाया नहीं करते।
जिनकी सांसे चलती हो आपके खून से।
आलआऊट जलाकर उन्हें भगाया नहीं करते।

जितेन्द्र सागर
मो००८९५७१२४४६०

मुद्दा

आम आदमी की हड्डी पर कबड्डी क्यों?

✍राजीव गुप्ता, नई दिल्ली

दिल्ली की सड़को पर भीख मांगने वाले सभी लोग उत्तर प्रदेश के है, यह कहना है कांग्रेस पार्टी के तथाकथित युवराज राहुल गांधी जी का जो कि गरीबी को जानने के लिए एवं सस्ती राजनैतिक लोकप्रियता हासिल करने के लिए दलितों के घर कभी रात बिताते है तो कभी मनरेगा में काम कर रहे लोगों के बीच प्लास्टिक के टोकरे में मिट्टी कंधे पर उठा कर खुद को आम आदमी के साथ होने का दावा ठोकते हैं.जब ये सारे दांव-पेंच विफल हो गए तो उत्तर प्रदेश के उन्हीं लोगों को भिखारी कहने लगे जिससे वो खुद हाथ जोड़-जोड़ कर जनता जनार्दन से उनकी कांग्रेस पार्टी को वोट देने की वकालत कर रहे हैं।

कहीं राहुल जी ने अभी से ही हार तो नहीं मान ली है, जो कि स्वाभिमान पर कुठारघात करने वाली ऐसी भाषा का उपयोग कर रहे है, जिसमें उनकी बेचैनी साफ जाहिर हो रही है. जनाधार खोने के डर से शायद उन्हें अब 'गुस्सा' भी आने लगा है. क्योंकि प्रदेश की मुखिया सुश्री मायावती जी ने उत्तर प्रदेश के चार हिस्से के पुर्नगठन के विधेयक को विधानसभा सदन में ध्वनिमत से पास करवाकर ऐसा राजनैतिक दांव चला है कि ये चारो खाने चित्त हो गए हैं और कुछ बोलने के लिए इनके पास अब बचा नहीं हैं.

ज्ञातव्य है कि अपने घोटालों और गलत नीतियों से बढ़ती महंगाई से देश को कंगला बनाने के फितरत कांग्रेस पार्टी की सदैव से रही है. कांग्रेस नेतृत्व की वर्तमान सरकार को अगर 'घोटाला सरकार' की संज्ञा दी जाय तो कोई अतिश्योक्ति न होगी. कई अरोपी मंत्री/सांसद जेल के अन्दर हैं.

राहुलजी के अनुसार अब राजनेता बड़े हो गए है और हेलिकाप्टर के सवारी पर जनता के बीच जाते हैं. कुंए का पानी पीने से पेट खराब हो जायेगा इस डर से अब राजनेताओं ने आम जनता के बीच जाना छोड़ दिया है. पर वास्तव में आज तक सबसे ज्यादा हेलिकॉप्टर के सवारी करते हुए मैंने इन्हें ही देखा है, क्योंकि भीड़ जुटाने में हेलिकॉप्टर की बड़ी भूमिका ग्रामीण क्षेत्र में आज भी है. रही बात कुएं के पानी पीने की तो बोतल बंद 'मिनरल वाटर' की शुरुआत भी कांग्रेस सरकार को ही जाता है क्योंकि विदेशी कंपनियों को भारत में आने का न्योता इन्हीं की सरकार ने दिया था. गौरतलब है कि भारत में मिनरल वाटर का व्यवसाय करने के लिए सबसे पहली कंपनी 'बिसलरी' १९६५ में श्री सिग्नूर फेलिचे द्वारा मुंबई में स्थापित की गयी थी.

महंगाई के मुद्दे पर लगातार दो दिन लोकसभा की कार्यवाही स्थगित हुई. मंहगाई सुरक्षा का रूप धारण कर दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है. एक तरफ जहां मुद्रास्फीति में जबरदस्त गिरावट आ गयी है जिसके कारण रुपया निम्नतर स्तर पर पहुंच गया है तो वही दूसरी तरफ वित्त मंत्री जी के अनुसार अगले वर्ष मार्च-अप्रैल तक महंगाई कुछ कम होने के आसार है.

राहुल जी के परनाना श्री जवाहर लाल नेहरु से लेकर अब तक फूलपुर, अमेठी और रायबरेली जो कि इनके परिवार के संसदीय क्षेत्र रहे हैं, का विकास तो अब तक कर नहीं पाए, परन्तु ये तथाकथित युवराज अब पूरे उत्तर प्रदेश को नंबर एक बनाने की वकालत कर भोली जनता को अपनी ओर रिझाने के लिए तरह-तरह का विधानसभा के चुनाव से ठीक पहले केंद्र से राहत पैकेज के नाम पर पैसे का लालच देकर वोट बटोरने की फिराक में है. राहुल गांधी जहां एक तरफ केंद्र से आर्थिक सहायता का एलान करते है तो वही दूसरी तरफ उत्तर प्रदेश की जनता को 'भिखारी' कहकर उन्हें उनकी औकात बताना चाहते है. ये तो वर्तमान कांग्रेस की करतूतों का नमूना मात्र हैं.

ऐसे में राहुल गांधी जी उत्तर प्रदेश को विकास में आगामी दस वर्षो में नंबर १ बनाना चाहते है यह संदेहास्पद है. रही बात दिल्ली की लालबत्तियों पर भीख मांग रहे भिखारियों की तो इन्हें उन भिखारियों से पता तब चला कि वो उत्तर प्रदेश के हैं, जब इन्होंने अपनी गाड़ी का शीशा नीचे कर उनके राज्य के बारे में पूछा. पर सच्चाई इससे कोसों दूर है. वास्तविकता यह है कि हर महीने करोड़ो रुपये इनकी सुरक्षा के ताम झाम पर खर्च होते हैं. ये हर समय पांच स्तर की कड़ी सुरक्षा के घेरे में रहते हैं. सबसे बाहर स्थानीय पुलिस, फिर कमांडो, फिर एन.एस.जी के कमांडो, फिर उसके बाद दो लेयर एसपीजी संभालती है. इनके काफिले में करीब दस पाइलट कारे सबसे आगे चलती है जो ट्रैफिक को पहले ही रोक देती है और वैसे भी किसी एसपीजी सुरक्षा प्राप्त व्यक्ति की कार को किसी भी लालबत्ती पर रोका नहीं जाता. ऐसे में राहुल जी की यह बात बहुत ही हास्यपद है एवं उत्तर प्रदेष के उन करोड़ो मेहनती लोगों के स्वाभिमान पर कुठाराघात के समान है.

मुद्दा

राजनेता सिर्फ अपना वोट बैंक सुधारने के लिए चुनाव से पहले विकास की बात तो करते हैं परन्तु चुनाव आते-आते वो विकास की राजनीति छोड़ जाति की राजनीति शुरू कर जाति के नाम पर वोट बटोरने की कोशिश में लग जाते हैं. यही उत्तर प्रदेश की राजनीति का इतिहास रहा है. अगर धर्म और जाति के आंकड़ो के हिसाब से गुणा भाग की जाये तो प्रदेश में सबसे अधिक संख्या २८ प्रतिशत पिछड़ी जाति, २२ प्रतिशत दलित, १६ प्रतिशत मुसलमान, ११ प्रतिशत ब्राहमण, ६ प्रतिशत ठाकुर, ४ प्रतिशत वैश्य, ४ प्रतिशत जाट और ५ प्रतिशत अन्य जातियों के वोट माने जाते हैं. पिछड़ी मे यादवों की तादाद सबसे अधिक बताई जाती है.

यह विडंबना ही है कि देश की स्वतंत्रता के बाद से यूपी में १९८९ तक अधिकांश समय कांग्रेस का ही राज रहा. उसके वोट बैंक में मुख्य रूप से ब्राहमण+दलित+मुसलमान हुआ करते थे. परन्तु ढांचा गिरने के बाद कांग्रेस का ये समीकरण गड़बड़ा गया. उधर मंदिर मस्जिद विवाद की शतरंज तो कांग्रेस ने बिछाई थी लेकिन भाजपा ने उसके घर में सेंध लगाकर उसे मात दे दी. उसने न केवल कांग्रेस का सबसे मजबूत, ब्राहमण वोट बैंक को तोड़ा बल्कि कुछ पिछड़ी जातियों को भी अपने साथ लामबंद करके प्रदेश की राजनीति को मंडल बनाम मंदिर की राजनीति में रंग दिया.

इन्हीं आंकड़ो की बाजीगरी में और जातियों के तिकड़जाम में समूचा उत्तर प्रदेश फंस कर विकास के लिए अभी तक तरसता रहा है. ऐसे में क्या कभी उत्तर प्रदेष की राजनीति की मुद्दा वास्तविक रूप से विकास बन पायेगा? विकास के नाम पर ये राजनेता आम आदमी की हड्डी पर कबड्डी कब तक खेलेंगे, असली मुद्दा यह है?

अगर आप चाहते है कि:

०१ प्रत्येक कार्य के लिए घूस की रकम निर्धारित कर दी जाए या घूस लेने की पूरी छूट हो
०२ आपकी गली-मोहल्ले की सड़के हर हफ्ते बनें
०३ आपके मोहल्ले की नालियां, हर हफ्ते बनें
०४ आपको घर बैठे तनख्वाह मिले
०५ सभी सरकारी पदों को आरक्षित कर दिया जाए।
०६ सभी जातियों को आरक्षण का लाभ दिया जाए
०७ सभी चुने हुए पदो (मुख्यमंत्री, मंत्री, निगमों के अध्यक्ष आदि) पर मुस्लिम वर्ग का एकाधिकार हो
०८ छात्रों को बिना पढ़े १०वीं, १२वी, स्नातक, परास्नातक, डाक्टरेट की डिग्री मिल जाये

भारतीय भ्रष्टाचार पार्टी के उम्मीदवारों को नोट की गड्डी पर बटन दबाकर विजयी बनायें

दाउजी

राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाभपा

महान देशभक्त और स्वतंत्रता सेनानी: बाबा राम सिंह

✍दमनजीत सिंह, मोहाली, चंडीगढ़

बाबा राम सिंह का जन्म ३ फरवरी १८१६ को बसन्त पंचमी की रात जिला लुधियाना के राईया गांव में हुआ. आपके पिता का नाम जस्सा सिंह राम गढ़िया और माता का नाम सदाकौर था. आपका विवाह लुधियाना के धरोड़ गांव में जस्सा जी से हुआ. बचपन से ही आपको गुरूवाणी की लग्न थी.

सन् १६३५ से १६४५ तक आपने महाराज रणजीत सिंह की फौज की नैनिहाल रेजीमेंट में नौकरी की. इस समय के दौरान आपने १६४१ में गुरू बालक जी से नाम की दात प्राप्त की. उसके बाद आपने फौज की नौकरी छोड़कर वापस आ गए. वहां आकर गुरमत विचार से लंगर की प्रथा प्रचलित की और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई. अपने सिक्कों में देशी-विदेशी वस्तुओं का प्रचार किया. अदालत का बायकाट किया. बाबा राम सिंह जी के आदेशानुसार नामधारियों द्वारा सरकारी संस्थाओं का पूर्ण बायकाट और स्वदेशी प्रचार होता देखकर अंग्रेज जान गये कि सत गुरु राम सिंह जी स्वराज्य कायम करना चाहते हैं. उनका शक सच्चाई में बदलने लगा. जब बाबा राम सिंह जी के दूतों ने देशी रियासतों के अतिरिक्त विदेशों में नेपाल, अफगानिस्तान, रूस आदि से राजसी सम्बन्ध बना लिये. देशी रियासत में 'कूका पलटन' की स्थापना कर ली.

पंजाब का इंस्पेक्टर जनरल पुलिस ३० जनवरी १८७१ की अपनी रिपोर्ट में लिखता है:-'इस भर्ती के बारे में चौकस होना चाहिये. अमन हो या लड़ाई, एक धार्मिक नेता को दिया गया ऐसा अवसर किसी भी समय किसी भी सरकार के लिए लाभदायक नहीं हो सकता.

पंजाब के इतिहासकार सैयद मुहम्मद लतीफ के अनुसार गुरु राम सिंह और उनके शिष्यों के मुद्दे महज धार्मिक ही नहीं बल्कि 'धर्म सुधारक और सदाचारक नसीहतों' के साचे में गहरे राजनीतिक मनसूबे थे.

चाहे अंग्रेजों ने १८६३-६७ ई०तक सतगुरु राम सिंह जी को श्री भैरवी साहिब में नजरबंद रखा, परन्तु उनका प्रचार कम नहीं हुआ.

अंग्रेजों द्वारा करवाई जा रही 'गौहत्या' का मनोरथ अब लोगों को समझ आने लगा था. नामधारियों ने अंग्रेजों की इस चाल को कुचलने के लिए बुचड़खाने बन्द करने शुरु कर दिये. फलस्वरुप अंग्रेज बौखला गये. उन्होंने नामधारी सिक्खों को रायकोट और अमृतसर में फांसी दे दी. कईयों को काले पानी की सजा दी. कोटला में ६६ सिक्खों को तोपों से उड़ा दिया गया.

२६ नवम्बर १८७१ ई० में लुधियाना सेंट्रल जेल के बाहर दो नामधारी सिक्खों सूबा ज्ञानी रतन सिंह जी और संत रतन सिंह जी को रायकोट बुचड़खाने पर धावा बोलने वाले एक्ट के अधीन फांसी दे दी गई.

अगले वर्ष नामधारियों द्वारा 'गौहत्या' का फिर विरोध हुआ. उन्होंने जिम्मेदार सरकार से बदला लेने का निर्णय लिया. बाबा राम सिंह जी समझते थे कि अभी संग्राम में कूदने का ठीक समय नहीं है. परन्तु इसके बावजूद भी १५० नामधारियों के जत्थे ने मलौद सरकारी खजाने के किले पर आक्रमण किया. फलस्वरुप परिणाम गलत निकला. अंग्रेजी सरकार ने बाबा राम सिंह और उनके सेवकों को रंगून जलावतन कर दिया. वहां से वह १८८० में संधोई ले जाये गये. सरकारी रिकार्ड के अनुसार वहीं वह स्वर्ग सिधार गये. बाबाजी प्रदेशागमन के बाद भी भैरवी साहिब राजनीतिक सरगर्मियों का केन्द्र बना रहा. इसलिये भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में भैरवी साहिब का स्थान महत्वपूर्ण हैं.

एस.एम.एस. रचना

खुदा ने संसार बनाया और सो गया, खुदा ने इंसान बनाया फिर सो गया, फिर इंसान ने मोबाइल बनाया... ना खुद सोया ना दूसरों को सोने दिया.

++

बापू हमेशा इतनी भीड़ अपने साथ लेके क्यों चलते थे?
सोचो और बताओ?
क्योंकि उनका कहना था कि 'संगठन में शक्ति है'
अकेले में डर लगता हैं

++

वो रूठ कर कहती है हमसे, जान, तुम्हारा तो मिलना कम हो गया है... उस पगली को कौन समझाये की, पेट्रोल में तो आग लगा है.

++

न जाने उस पर इतना यकीन क्यों है, उसका ख्याल इतना हसीन क्यों है, सुना है प्यार का दर्द मीठा होता है, तो फिर आंख से निकला आंसू नमकीन क्यूं हैं? **मो०जितेन्द्र सागर, ०८६५७१२४४६०**

बालक धरती पर शुद्ध, दयालु एवं ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित गुणों को लेकर जन्म लेता है

✍ **जगदीश गांधी,** प्रबंधक, सिटी मान्टेसरी स्कूल, लखनऊ

प्रत्येक बालक पवित्र, दयालु तथा प्रकाशित हृदय लेकर इस संसार में पैदा होता है. परिवार, समाज तथा सकूल तीनों अज्ञानता के कारण बालक के इन तीनों गुणों को धीरे-धीरे कम कर देते हैं. परमात्मा का प्रतिरूप लेकर पैदा हुए बालक के मस्तिष्क का यही से विकृत होना प्रारम्भ हो जाता है. इस प्रकार बालक का जीवन स्वयं के लिए, परिवार के लिए तथा समाज के लिए शनैः शनैः दुःखदायी होता चला जाता है.

सभी अवतार समय-समय पर अपने युग की आवश्यकताओं को अनुरुप एक ही परमात्मा की ओर से दिये गये सामयिक ज्ञान को लेकर अवतरित होते हैं. एक ही परमात्मा की ओर से अवतरित सभी पवित्र ग्रन्थों गीता, त्रिपटक, बाईबिल, कुरान, गुरूग्रंथ साहिब किताबे अजावेस्ता, किताब-ए-अकदस आदि-आदि में एक ही मुख्य ज्ञान समाहित है कि **'हे आत्मा के पुत्र! मेरा तुझे प्रथम परामर्श यह है कि तू एक शुद्ध, दयालु एवं ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित हृदय धारण कर ताकि इस पृथ्वी का अनन्त साम्राज्य तेरा हो.'**

बालक जन्म लेते ही परमात्मा के अनन्त साम्राज्य का मालिक होता है क्योंकि वह शुद्ध, दयालु तथा ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित होता है. किन्तु परिवार, समाज तथा स्कूल अज्ञानतावश बालक में जन्म से निहित इन तीन ईश्वरीय गुणों को निखारने संवारने पर महत्व नहीं देते हैं. जब से परमात्मा ने यह सृष्टि और मानव प्राणी बनाये तब से परमात्मा ने उसे उसकी तीन वास्तविकताओं-भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक के साथ एक संतुलित प्राणी के रूप में निर्मित किया है. परिवार, समाज तथा स्कूल तीनों मिलकर बालक को निपट भौतिक व सांसारिक ज्ञान करा रहे हैं. जबकि परिवार, समाज तथा स्कूल तीनों को मिलकर बालक की तीनों वास्तविकताओं अर्थात भौतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक का संतुलित विकास करना चाहिए तथा उसमें पवित्रता का गुण, दयालुता का गुण तथा ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित होकर समाज में अच्छा आचरण करने के गुण विकसित करने चाहिये.

मैं साक्षी देता हूं कि हे मेरे परमात्मा तूने मुझे तुझे जानने और तेरी पूजा करने के लिए ही उत्पन्न किया है. परमात्मा को जानने का अर्थ है युग-युग में अवतरित परमात्मा की शिक्षाओं को जानना तथा परमात्मा की पूजा करने का अर्थ है परमात्मा की शिक्षाओ पर चलना. ईश्वर की शिक्षाओं को जानने तथा उस पर चलने की बजाय धर्म के नाम पर मात्र ऊपरी कर्मकाण्ड तथा चिन्ह पूजा कराये जाते हैं. इस अज्ञानता के कारण मानव जीवन धर्म के कर्मकाण्डों में फंस जाता है. परमात्मा की शिक्षाओं को गहराई में जाकर ना जानने के कारण ही रावण, दुर्योधन घंटो कर्मकाण्डों से युक्त पूजा करने के बावजूद परमात्मा के सबसे बड़े विरोधी बन गये. कई डकैत भी मंदिर में पूजा करके डकैती डालने जाते हैं. ये सभी ईश्वर की आज्ञाओं को न जानते हैं और न उन पर चलते हैं. इस कारण से रावण तथा दुर्योधन ने अपने भौतिक सुख के साथ ही अपने सामाजिक तथा आध्यात्मिक गुणों का विनाश कर लिया.

बालक को बचपन से ही परिवार, समाज तथा स्कूल तीनों मिलकर धर्म का गलत अर्थ समझा देते हैं. परमात्मा की शिक्षाओं का ऊपरी कर्मकाण्डों से दूर-दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं है. किसी भी धर्म की परमात्मा की ओर से अवतरित पवित्र पुस्तकों में ऊपरी कर्मकाण्डों तथा चिन्ह पूजा की बात नहीं कहीं गयी है. अब चिन्ह पूजा के दिन लद गये हैं. अब हमारे कार्य-व्यवहार ही दिन-प्रतिदिन परमात्मा की सुन्दर प्रार्थना बनें. ईश्वर की आज्ञाओं को जानना और उसे कार्य-व्यवहार में लाना ही परमात्मा की वास्तविक पूजा है.

जब जब होई धर्म की हानि बाढ़े

> सभी अवतार परमात्मा की ओर से दिये गये सामयिक ज्ञान को लेकर अवतरित होते हैं.
>
> बालक जन्म लेते ही परमात्मा के अनन्त साम्राज्य का मालिक होता है क्योंकि वह शुद्ध, दयालु तथा ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित होता है.
>
> परमात्मा की शिक्षाओं को जानना तथा परमात्मा की पूजा करने का अर्थ है परमात्मा की शिक्षाओ पर चलना.

असुर अधर्म अभिमानी. तब तब धरि प्रभु विविध शरीरा हरे कृपानिधि सज्जन पीरा।। अर्थात जब-जब धर्म की हानि होती है और संसार में असुर, अधर्म एवं अन्यायी प्रवृत्तियों के लोगों की संख्या सज्जनों की तुलना में बढ़ जाने के कारण धरती का संतुलन बिगड़ जाता है. तब-तब परम पिता परमात्मा कृपा करके धरती पर अपने प्रतिनिधियों को मानवता का मार्गदर्शन कर समाज को सुव्यवस्थित करने के लिए युग-युग में विविध रूपों में भेजते हैं.

युग-युग में परमात्मा ने दया करके उस युग के लिए अपनी शिक्षाएं गीता, त्रिपटक, बाईबिल, कुरान, गुरू ग्रन्थ साहिब, किताबें अजावेस्ता, किताबें अकदस आदि पवित्र ग्रन्थों के माध्यम से भेजी है. हम जिस युग में रह रहे हो उस युग की ईश्वरीय शिक्षाओं का ज्ञान उस युग के पवित्र ग्रन्थ के माध्यम से होना बहुत जरुरी है. मनुष्य का जन्म पवित्र पुस्तकों की शिक्षाओं को गहराई में जाकर जानना, उस पर मनन करना, निध्यासन करना तथा उन पर चलने के लिए ही हुआ है.

परमात्मा की ओर से अवतरित पवित्र पुस्तक में दिये ज्ञान के किसी एक भी शब्द के दो मायनें नहीं निकाले जा सकते और न ही उसके एक भी शब्द में कोई बदलाव किया जा सकता हैं. संसार के संत-महात्मा तथा महापुरुष भारी कष्ट उठाकर तथा कठोर तप करके मनुष्य को अच्छा ज्ञान देते है लेकिन संत-महात्माओं द्वारा दिया जा रहा ज्ञान त्रुटिरहित ही हैं. उसमें इस बात की गारण्टी नहीं होती है.

रामचरितमानस में संत तुलसीदास एक चौपाई में लिखते है-**ढोल गवांर सुद्र पशु नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी।।** अर्थात ढोल, गवांर, शुद्र, पशु तथा नारी ये सब दण्ड के अधिकारी है. संसार के अनेक विचारशील लोग संत तुलसीदास के द्वारा रामचरितमानस में लिखी इस चौपाई से सहमत नहीं है. हमें इसे मानव लेखनी की गलती के रूप में स्वीकारना चाहिए और यह मानना चाहिए कि संत तुलसीदास लगभग ७५०० वर्ष पूर्व धरती पर आये मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम जैसे महान व्यक्तित्व को अपनी मानव बुद्धि से जितना पकड़ तथा समझ सके उतना उन्होंने अपनी लेखनी से लिख दिया. इस तरह की बात बाल्मिकी रामायण में नहीं है. पवित्र गीता परमात्मा की ओर से अवतरित पुस्तक है. रामचरित मानस परमात्मा की ओर से अवतरित पुस्तक नहीं है.

> परमात्मा की शिक्षाओं का ऊपरी कर्मकाण्डों से दूर-दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं है.
>
> जब-जब धर्म की हानि होती है और संसार में असुर, अधर्म एवं अन्यायी प्रवृत्तियों के लोगों की संख्या बढ़ जाती है तब-तब परम पिता परमात्मा धरती पर अपने प्रतिनिधियों को मार्गदर्शन के लिए भेजते हैं.

राम ने समाज के सभी वर्गो का समान रूप से आदर किया. राम ने अहिल्या जैसी श्रापित नारी को तारा, केवट की बात प्रेमपूर्वक मानकर उसकी नाव पर सवार हुए, निषादराज को मित्र का स्थान दिया, प्रेम के वश में होकर शबरी के झूठे बेर खाये, राज्य के एक धोबी द्वारा सीता के चरित्र पर सवाल उठाने पर प्राणों से प्यारी सती को प्रायश्चित करने के लिए महल तथा अपने से अलग आश्रम में रखा. संकट की घड़ी में राम की मदद करने के लिए एक भी मनुष्य आगे नहीं आया. राम ने पशु जाति के वानरों-रीझों की सहायता से समुद्र पर पुल बांधकर लंकर पर चढ़ाई की. रावण को मारकर सीता को मुक्त कराया. राम वानरों में से एक वानर हनुमान को अपने साथ अयोध्या ले आये और कहा कि हनुमान मेरा सबसे बड़ा भक्त है. आज राम से अधिक हनुमान के मंदिर संसार में हैं.

सारी वसुधा कुटुम्ब के समान है. आज के युग में हमें अपने बच्चों को सारे धर्मो की मूल शिक्षाओं का ज्ञान देना चाहिए. बच्चों को हमें बताना चाहिए कि ईश्वर एक है, धर्म एक है तथा मानव जाति एक हैं. यदि हमनें यह नहीं किया तो वह दूसरे धर्म वालों से पराया जैसा व्यवहार करेगा. आईये, बच्चों में परमात्मा के दिव्य रहस्यों को समझने की एकाग्रता, प्यास एवं ललक जगाये. ताकि हमारे बच्चे इस विशाल ब्रह्माण्ड के निर्माण के पीछे छिपे परमात्मा के दिव्य रहस्य को समझ सके.

आज के युग में बालक को अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, व्यवसाय तथा कार्य क्षेत्र में सुखी तथा सफल होने के लिए आज के युग के ज्ञान तथा आज के युग की बुद्धिमता की आवश्यकता है. बच्चे के मस्तिष्क को सृष्टि के ज्ञान-विज्ञान की सबसे बड़ी प्रयोगशाला बनाये. स्कूल चारदीवारों का ऐसा भव है जिसके क्लास रूम में मानव जाति का भाग्य निर्मित किया जा रहा है. भौतिकता, सामाजिकता तथा आध्यात्मिकता तीनों का संतुलन ही मानव जीवन को संसार में हर परिस्थितियों में सफलतम तथा सुखी बनाता है.

अगर किसी को कुछ दे सकते हो उसके मुस्कुराहट दे दोः दाउजी

एम०एस०कृष्णमूर्ति

✍डॉ0 गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

१६ जून १६३१ को मन्दगेरे, कर्नाटक में एम. सुब्बराय के पितृत्व में जन्में डॉ० एम.एस.कृष्णमूर्ति 'इन्दिरेश' की मातृभाषा कन्नड़ है. १६५८ में मैसूर विश्वविद्यालय से कन्नड़ में परास्नातक, १६६२ में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से हिन्दी में परास्नतक, १६६६ में मैसूर विश्वविद्यालय से हिन्दी में पी.एच.डी. की. तदोपरान्त १६५८-१६६२ तक नेशनल कॉलेज, बेंगलूर में प्रवक्ता (कन्नड़ और संस्कृत), १६६२-६६ प्रवक्ता (हिन्दी), १६६६-६८ तक प्रवाचक, १६६८-७३,प्रवक्ता स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, मैसूर वि.वि., १६७३-८८ प्रवाचक, १६८८-६१ प्राचार्य एवं अध्यक्ष, १६८८-६१ निदेशक, गांधी भवन, मैसूर विश्व विद्यालय, १६८८-६१ तक सदस्य हिन्दी सलाहकार समिति, स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन मंत्रालय, नई दिल्ली के पदों को सुशोभित किया.

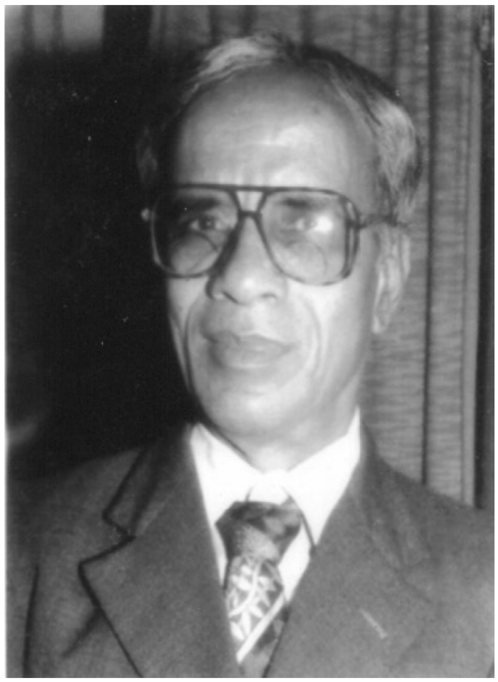

अहिन्दी भाषी होते हुए हिन्दी साहित्य में पर्याप्त कार्य किया. जिसमें **उपन्यास**-अपराजित, राग कनाडा, परशुराम की बहनें, ज्योतिकलश, एक **कहानी संग्रह**-आरण्यक, **काव्य**-कविश्री कुवेम्पु, कविश्री बेन्द्रे, **शोध** -हिन्दी और कन्नड़ साहित्य की प्रमुख धाराओं का तुलनात्मक अध्ययन, समाराधान, कन्नड़ साहित्यवाहिनी, **संपादन**-साहित्य संदीपनी, साहित्य स्तबन **अनुबाद-(हिन्दी से कन्नड़)** बाणभट्ट की आत्मकथा, मृगनयनी, जयसोमनपथ, सूरज का सांतवा घोड़ा, चिदंबरा संचयन, मेघदूतः एक पुरानी कहानी, अनामदास का पोथा, कोमल गांधार, रामचरितमानस (गद्यानुवाद), विनय पत्रिका (काव्यानुवाद), कबीर पदावली(काव्यानुवाद), बिहारी सप्तशती(काव्यानुवाद), मीरा पदावली, सूरा पदावली में प्रकाशित हो चुकी है. हिन्दी के अतिरिक्त कन्नड़ भाषा में कार्य किया है. हिन्दी साहित्य, सिद्ध साहित्य, सूफी प्रेमकाव्य, उत्तरद संत परम्परे, सूफी प्रेम दर्शन, बिहारी, सूरदास, विद्यापति, **उपन्यास**-नादसेतु, खगायन, हडगिन हक्कि, परशुरामन तंगियरू, कुरि साकिद तोल, कस्तूरीमृग, चतुर्मुख, रथचक्र, ओंटि सलग, फल्गुणि **कहानी संग्रह**-बेट्टके चलियादड़े, पुनरागमन, **निबंध संग्रह**-गंधमादन, चंक्रमण, चैत्ररथ, हादिपुराण, एकांत संगीत, क्रीतराग, गिरिकर्णिका, दीपमाले, रेखा चित्रभित्तिय चित्रगलु, गोपुरद दीप, **जीवनी**-सन्त नरसी मेहता, **वचन**-व्योमकेशन वचनगलु, **संवाद**-समुद्र संगम, **नाटक**-रत्न कंकण, **आलोचना** -सीमोल्लङ्घन, सेतुबंध, परिशोधन, **बाल साहित्य**- मीराबाई, संत रैदास, महर्षि कर्वे, कित्तूरु रानि चेन्नमा, कोगिलेय चिक्कव्व, चंदमामन अलिय, मेनसिन कायिय साहस, कालुगल जगल, गोराबादल, चैत्रपल्लव, **काव्य**- अनन्तयात्रे, **सम्पादन**-नलचंपू संग्रह का कार्य किया हैं.

आपकी उपरोक्त सेवाओं को देखते हुए तीन बार केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय पुरस्कार, बाबू गंगाशरण पुरस्कार-केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा, आनन्द ऋषि पुरस्कार-हैदराबाद, हिन्दी प्रतिष्ठान-हैदराबाद, महात्मा गांधी पुरस्कार-बेंगलूर, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया पुरस्कार, कर्नाटक राज्य सरकार का पुरस्कार, उत्तर प्रदेश सरकार का सौहार्द सम्मान, कर्नाटक राज्य साहित्य अकादमी से दो बार पुरस्कृत, नृपतुंग पुरस्कार, स्वर्णजयन्ती पुरस्कार-मैसूर वि.वि., कर्नाटक विद्यावर्धक संघ का पुरस्कार, ती.न. श्री पुरस्कार, मैसूर वि.वि. कर्नाटक राज्य सरकार का पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं.

हिन्दी और कन्नड़ में साहित्य की लगभग सभी विधाओं में कार्य करने वाले डॉ.कृष्णमूर्ति की कन्नड़, हिन्दी और अंग्रेजी में डेढ़ सौ से भी अधिक लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं.

एस.एम.एस. रचना

जिंदगी आपको इतने तोहफे दे की आप तोहफा खरीदना ही भूल जाए, इतनी खुशी दे की आप दुखी होना भूल जायें, पर इतने सारे दोस्त ना दे की आप हमें ही भूल जाओं.

++++++++++++++++++++++

जिंदगी सुंदर है पर मुझे जीना नहीं आता.
हर चीज में नसा है पर मुझे पीना नहीं आता, सब मेरे बिना जी सकते हैं सिर्फ मुझे ही किसी के बिना जींना नहीं आता. **मो०जितेन्द्र सागर, ०८६५७१२४४६०**

बचपन

याद है वो बचपन के दिन
जब हर समय खेलते रहते थे हम
यही करते थे हम हर दिन
और डॉट पड़ती थी हमें कम।
याद है वो लोरियां
जिसको सुनके सो जाते थे हम
और याद है वो छोटी-छोटी बातें
जिसको सुनके रो जाते थे हम।
याद है वो प्यारे-प्यारे दिन
जब मां और पा अपने हाथों से खाना खिलाते थे
जब भईया और दीदी मेरा ख्याल रखते थे
और साथ ही मुझे पढ़ाते थे।
यादे तो बहुत सारी है हमारे पास
पर क्या करें बड़े हो गए हैं हम
लेकिन हमेशा याद रहेगा हमें
वो प्यारा सा बचपन।

भावना चौबे, कक्षा-१०, आर्मी पब्लिक स्कूल शिलांग, १०१ एरिया, शिलांग, मेघालय

बाल्य काव्य प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता में वे छात्र/छात्राएं सहभागी हो सकते हैं जिनकी उम्र ३० मार्च २०१२ तक १५ वर्ष से कम हो. इस प्रतियोगिता में सहभागी को अपनी स्वयं की या किसी भी अन्य साहित्यकार की रचना को पढ़ना होगा. स्वयं की रचना को पढ़ने वाले प्रतिभागियों को ५ अंक अतिरिक्त दिये जाऐंगें. प्रतिभागी को १२ फरवरी २०१२ को १० बजे से पूर्व कार्यक्रम स्थल पर अपना नाम दर्ज कराना होगा. इसके पूर्व भी पत्र के माध्यम से अपना नाम दर्ज करा सकते हैं. सर्वोच्च बाल रचनाकार को ११००/रुपये का ईनाम दिया जाएगा तथा पांच सात्वना पुरस्कार दिए जाएंगें।

हिन्दी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले सम्मानित होंगें

प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय से हाईस्कूल/इंटरमीडिएट/ स्नातक अंतिम वर्ष में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्रों को सम्मानित करता आ रहा है. इसमें छात्र/छात्राओं के अंक पत्र, उनका नाम व सम्पूर्ण पता, दूरभाष/मोबाइल सं०/ईमेल प्रधानाचार्य/ विभागाध्यक्ष द्वारा प्रमाणित प्रति के साथ भेजें. जिस विद्यालय के छात्र लगातार पांच वर्ष तक सम्मानित होगें उस विद्यालय के हिंदी विषय के अध्यापक/प्रवक्ता/विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. सभी चयनित छात्रों को गरिमामय कार्यक्रम में हिन्दी उदय सम्मान व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी. अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव निम्न पते पर लिखें:

सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-१४४/६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, **email:** sahityaseva@rediffmail.com **Mo.**: 09335155949

गुजारिश

१. 'विश्व स्नेह समाज' आपकी अपनी पत्रिका है. इसे अकेले न पढ़े, बल्कि दूसरे दोस्तों को भी इससे परिचित कराएं.

२. आप अपनी मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएं ही भेजें. एक बार में अधिकतम दो ही रचनाएं भेजें। उनके प्रकाशनोपरान्त ही दूसरी रचना भेजें. बिना उचित टिकट लगे जबाबी लिफाफे के अस्वीकृत रचना लौटाई नहीं जाती.

३. वैसे तो पत्रिका सभी बुक स्टालों पर उपलब्ध कराई जा रही है. फिर भी मिलने में असुविधा हो तो सदस्यता ग्रहण कर लें, पत्रिका डाक द्वारा भेज दी जाएगी.

४. सदस्यता शुल्क पत्रिका के खाते में सीधे जमा कर/धनादेश/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'विश्व स्नेह समाज' के नाम भेजें. शुल्क के साथ-साथ एक पोस्टकार्ड भी भेजें, जिस पर अपना नाम व पता साफ-साफ लिखें.

५.जो रचनाएं आपको अच्छी लगें उसके साथ रचनाकार को खत लिखकर अवश्य प्रोत्साहित करें.

६. 'विश्व स्नेह समाज' के परिशिष्ट अथवा प्रायोजित विशेषांक योजना में शामिल होने के लिए 09935959412 पर बात करें

❑संपादक

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज मासिक

(एक क्रान्ति)

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011
कानाफुसी: 09335155949 ई–मेलः vsnehsamaj@rediffmail.com

महोदय,
मैं विश्व स्नेह समाज मासिक का वार्षिक / पंचवर्षीय / आजीवन / संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये ....नकद / बैंक ड्राफ्ट / पे इन स्लिप.........................दिनांक.....................के अन्तर्गत अदा कर रहा हूं.
अतः मुझे हर माह विश्व स्नेह समाज मासिक निम्न पते पर भेजें

नाम :...
पिता / पति का नाम :..
पता :...
डाकखाना :..जनपद...................................
राज्य :..पिन कोड.................................
दूरभाष / मो0..ईमेलः..................................

विशेष नियमः

01 सदस्यता शुल्क बैंक ड्राफ्ट इलाहाबाद में देय होना चाहिए.
02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें
03 सदस्यता शुल्क पेइन स्लिप के माध्यम से अथवा सीधे यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः 538702010009259
आईएफएससीस कोड(आरटीजीएस): UBIN0553875
में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.
04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय प्रकाशित किया जाता है। विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.
05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाता है.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रतिः	रु0 10 / –	रु015 /
वार्षिक	रु0 110 / –	रु0200 /
पॉच वर्ष :	रु0 500 / –	रु0800 /
आजीवन सदस्यः	रु0 1100 / –	रु02500 /
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000 / –	रु011000 /

सम्मानार्थ प्रविष्टियॉ आमन्त्रित है

साहित्य जगत में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा २००३ से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्न सम्मान प्रस्तावित है-

कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना पर)-किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियों में

डॉ.किशोरी लाल सम्मान-(श्रृंगार रस की रचना) अप्रकाशित एक रचना तीन प्रतियों में

प्रवासी भारतीय सम्मान-ऐसे प्रवासी भारतीय जो हिंदी की किसी भी विधा में लिख रहे हो. एक रचना तीन प्रतियां

हिंदी सेवी सम्मान-(विदेशी/अहिन्दी भाषी नागरिक)- किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियों में

राजभाषा सम्मान-सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए. विस्तृत विवरण तीन प्रतियों में

राष्ट्रभाषा सम्मान-अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियो में

युवा कहॉनीकार/युवा व्यंग्यकार/युवा कवि सम्मान-(उम्र ३५ वर्ष से कम)-सम्बन्धित विधा की एक रचना तीन प्रतियों में

कला/संस्कृति सम्मान-किसी भी कला (संगीत, नाटक, कला, पेंटिग, नृत्य आदि) के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए, विस्तृत विवरण तीन प्रतियो में

बाल साहित्यकार सम्मान-(उम्र २१ वर्ष)-किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियो में

राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान-हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में. **राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम)-किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए,

पुलिस हिंदी सेवा सम्मान- पुलिस सेवा में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने वाले, सम्पूर्ण विवरण एक अप्रकाशित रचना तीन प्रतियो में

सांस्कृतिक विरासत सम्मान- ऐसे व्यक्ति/संस्थाएं जो देश के किसी भी क्षेत्र में स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं, सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में

विधि श्री-विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने वालों को प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में

डॉक्टरश्री-डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी की सेवा के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

शिक्षक श्री-शिक्षा के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

सैनिक श्री-सैन्य सेवा में कार्य करते हुए हिंदी की सेवा प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

विज्ञान श्रीः विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

प्रशासक श्री-ऐसे प्रशासक जो किसी भी प्रकार से हिंदी को बढ़ावा दे रहे हो, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

विहिसा अलंकरण-हिन्दी की किसी भी विधा में प्रकाशित/अप्रकाशित १०० पृष्ठों की एक किताब के लिए,

उपाधियां उपाधियां प्रकाशित/अप्रकाशित कम से कम १०० पृष्ठीय कृति पर ही प्रदान की जायेगी.

साहित्य के क्षेत्र मेंः साहित्य भूषण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सम्राट, कहानी सम्राट, कहानी रत्न, काव्य रत्न, काव्य श्री, काव्य शिरोमणि, दोहा श्री, ग़ज़ल श्री

समाज सेवा के क्षेत्र मेंः समाज शिरोमणि, समाज रत्न, समाज गौरव

विशेषः१. प्रविष्ट्रि के साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जबाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और २०० रुपये मात्र का धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/मल्टी सिटी चेक अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा

पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

२. सभी सम्मानों के लिए एक रचना तीन प्रतियों में भेजनी अनिवार्य हैं. सम्मान में प्रतिभागी सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जायेगी. जो जनवरी २०१३ से लागू होगी.

३. प्राप्त पुस्तके/रचनाएं किसी भी दशा में लौटाई नहीं जाएगी. रचनाओं के साथ मोलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. संस्थान को प्राप्त रचनाओं को प्रकाशित करने का अधिकार होगा.

४. सम्मान किसी भी परिस्थिति में डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा.

५. अपूर्ण प्रविष्ट्रियों पर विचार नहीं किया जाएगा. न ही इस संदर्भ में कोई पत्र-व्यवहार किया जाएगा.

६. प्रत्येक सम्मान के लिए एक विद्वजन का ही चयन किया जाएगा जो सर्वोच्च होगा. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. विवाद के संदर्भ में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा.

७. सम्मान समारोह इलाहाबाद में आयोजित किया जाएगा. चयनित सभी विद्वजनों को डाक से/दूरभाष/ई-मेल के माध्यम से सूचना दी जाएगी.

अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २०१२

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

सचिव, **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,**

एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.

मो०: ०६३३५१५५६४६, ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com

सम्मान हेतु आवेदन पत्र

सेवा में

सचिव
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
इलाहाबाद

विषयः ....सम्मान/उपाधि हेतू प्रविष्टि

संदर्भः

महोदय,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले...
.सम्मान/उपाधि हेतु मैं अपना आवदेन प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा विवरण निम्नवत हैः-

नाम : ....

पिता/पति का नामः...

पताः...

....

दू०/मो०संख्या..........................ईमेल-...........................

रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः...

विधा...................वर्ष.........................प्रेषित प्रतियां..............

धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक का विवरण, राशि.....................बैंक का नाम..........................संख्या.......................
....

मैं शपथ पूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूं कि ०१ प्रेषित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होऊंगा. ०२ मैंने संस्थान के पुरस्कार/सम्मान संबंधी नियम पढ़ लिए हैं और मैं उन्हें मान्य करता/ करती हूं

प्रस्तावक

नाम..............................
पूरा पता.......................
हस्ताक्षर.........................

भवदीय

हस्ताक्षर...................................
पूरा नाम...................................

सलंग्नक

०१ सचित्र जीवन परिचय-एक प्रति ०२ टिकट लगा लिफाफा/पोस्टकार्ड-एक ०३ धनादेश/बैंक जमा पर्ची छाया प्रति-एक
०४ सम्बन्धित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि- तीन प्रतियों में

मुझे दुआ चाहिये

श्रीमती तारा सिंह, नवी मुम्बई

सुना था, नोटों की हरियाली और उजले सिक्के की चमक, बड़े-बड़ों के ईमान को डोला देता है, संत-आंख का पानी उतर आता है. लकिन यह क्या, इसने पी रखी है क्या जो चीथड़े पर इतना गुमान दिखा गया, जैसे कोई करोड़पति हो. एक-दो रुपये नहीं, पूरे सौ रुपये के नोट को लात मार गया. कह गया, 'मैडम! इसे अपने पास ही रखो, अगर कुछ देना ही चाहती हो तो मेरे लिये दुआ करना.'

पहले तो मुझे उसकी गरीबी पर दया आई थी, जो मैं पन्द्रह की जगह सौ रुपये देना चाही, लेकिन उसका यह व्यवहार मुझे बहुत दुख पहुंचाया और मैं वहीं प्लेटफार्म पर खड़ी-खड़ी उसे देखती हुई, बड़बड़ाती रही, नालायक! दुआ लेकर क्या करोगे, पहनोगे, बिछाओगे या ओढ़ोगे, लेकिन इस पैसे को तुम रख लेते, तो तुम्हारे कुछ काम आते. बेवकूफ है तुम, जिस दुआ को कभी अपनी आंखो से देखा ही नहीं, उसके लिए सौ के नोट को ठुकरा देना बेवकूफी नहीं तो और क्या है? अरे! दुआ तो सभी करते हैं, लेकिन क्या सबों की दुआ कबूल होती है? फिर मैं कौन सी साध्वी हूं, जो मांगने से ही तुम्हारे लिये, दुआ मांगूंगी. बेहतर होता कि तुम इस पैसे को रख लेते, तो तुम्हारा कुछ काम संवर जाता और मैं भी सोचती.....'चलो, उपकार का बदला, पन्द्रह की जगह सौ की नोट देकर चुका दिया.' आज के जमाने में, जहां लोग पैसे-पैसे का हिसाब करते हैं, वहां पिचासी रुपये अधिक देना, यह भी तो एक प्रकार का उपहार ही हुआ न!

तभी वहां खड़ा, एक आदमी मेरी ओर देखते हुए कहा, 'मैडम! वह लड़का तो चला गया, आप भी जाओ. वरना आपकी ट्रेन छूट जायेगी. शायद यही लास्ट ट्रेन भी है; फिर आपको, सुबह के चार बजे ट्रेनें मिलेंगी. मैं अपनी घड़ी की ओर नजर दौड़ाई, रात के १२.४५ बज रहे थे.

मैंने कहा, 'वो तो ठीक है भाई साहब! लेकिन वह लड़का, जिसने मुझे ट्रेन टिकट के लिए कूपन दिया, आपने देखा, मैंने उसे पन्द्रह रुपये के कूपन की जगह १०० रुपये दे रही थी लेकिन किस तरह उसने, रुपये को मेरी ओर ठेलते हुए चल दिया और जाते-जाते कह गया, 'पैसे नहीं चाहिये, हो सके तो मेरे लिए दुआ करना.' क्या आप उसे जानते हैं, क्योंकि वह भी मुसलमान था और आप भी....' अगर आप जानते हैं तो उसके घर का पता लिखवा देते, तो मैं उसे ये पैसे भेज देती. काफ़ी गरीब था, बेचारा. सुनकर उस आदमी ने कहा, 'नहीं मैं उसे नहीं जानता. लेकिन जब आप उस लड़के को कह रही थी, तुम्हारे पास १५ रुपये का एक्स्ट्रा कूपन हो तो, कृपया मुझे दे दो, मैं तुम्हारा उपकार भी नहीं भूलूंगी. टिकट की कतारें बहुत लम्बी है, और रात के १२.४५ बज रहे हैं..., शायद यही ट्रेन लास्ट भी है, उसने बिना कुछ बोले आपको कूपन थमा दिया. बदले में जब आप उसे पैसे देना चाहीं, तो वह झटकता हुआ निकल गया. तब मुझे भी उसका यह व्यवहार अच्छा नहीं लगा. मैं भी सोचने लगा था; पैसे नहीं लेना था, तो हंसकर कह सकता था.' मैडम! मुझे पैसे नहीं चाहिए, लेकिन वह बिना कुछ कहे निकल गया. जब मेरी नजरें उसकी फ़टी कमीज और नंगे पांव पर पड़ी, तब मुझे अपनी सोच पर बड़ी शर्मीदर्गी आई. मुझे लगा, यह उसकी अकड़ नहीं, गरीबी की मायूसी है, जो चुप रहने में ही अपनी भलाई समझता है. पर जाते-जाते उसका धीरे से यह कह जाना, 'मैडम! मुझे पैसे नहीं, दुआ चाहिए. हो सके तो, मेरे लिए दुआ करना.' इसलिए मैडम! उस गरीब के लिए दुआ कीजिए. आपके सौ रुपये की नोट उसके जीवन की तंगी नहीं मिटा सकेगी. यही कारण है कि उसने, आपसे दुआ की गुजारिश की. सोचा, आप जैसों की दुआ से शायद मेरा जीवन संवर जाय.'

सुनकर मेरी आंखें छलछला उठीं और आत्मा कह उठी, तुम जो कोई भी हो, ईश्वर! तुमको सुखी रखे. तुम जिस काम से मुम्बई आये हो, तुम्हारा काम पूरा हो. मेरी दुआ सदा तुम्हारे साथ रहेगी, भरोसा रखो. आज तपा रही धूप है, कल बरसात होगी.

ग़ज़ल

आज भी-जुल्मतों को नहीं है खबर
आखिरश कैसे होती है रौशन सहर
वो तमस्सुब की रह पर न चलते अगर
वीरॉ होने से बच जाते कितने ही घर
खत्म हो ही गयी जुस्तजू में उमर
एक भी-शख्स तो ना मिला मोतबर
चापलूसी नहीं मुझको भाती जरा
इसलिये तो खफा है अमीरे-शहर
मन्जिलों के निशॉ तक नहीं मिलते है।
देखिये मुश्किलों से भरा है सफर

डॉ०उषा यादव 'उषा', इलाहाबाद, उ.प्र.

कर्नाटक में नागपंचमी

✍डॉ. जे.वी.नागरत्नमा,
कर्नाटक

कर्नाटक में नागपंचमी बडे उत्साह के साथ श्रावण मास में मनाया जाने वाला व्योहार है. भाई बहन का भावनात्मक सम्बंध मैके का मोह ज्यादा होती है मायके में माता-पिता भाई-बहन का प्यार, व्याहार मनाने का उत्साह, और पति के घर आकर बहन को ले जाना, इंतजार करना, फुरसत नही. लेकिन व्यवहार का भ्रम उल्लास, नये कपड़े पहनना छोटे रहते समय खेलना, खूदना, आदि याद आते हैं. सभी स्त्रीयों के मन में सुख-दु:ख को बांटकर, घर में बचपन याद आते ही है श्रावण मास में व्योहार डाक न डाक आते ही रहता है सबको उत्साह, उल्लास भरा रहता है। भाई दूध की प्याले सिर पर डालकर स्नान कराने के बाद नहाकर आते ही आरती करते है भाई बहन के आरती थाली को पैसे डालते है। चार दिन पहले से भाई का इंतजार करते है.

व्योहार के दिन मंगल स्नान करके मिट्टी से नाग बनाकर कमरे में रखते है. गुड, तिल मुंगफली सब मिलाकर तबिह करते है, नैवेव्य करते है. पूजा उत्साह से करते दूध डालते है. अब जमाना बदल गया है कही नौकरी पर रहते है सिर्फ फोन में बाते, घर नहीं आ सकते. रक्षा बंधन भी इसी तरह होते है दोस्त में भेजते है, अब घर में पखवान न बनाते रेडी फुड लाते है. स्नान करके पीकर स्वीट लाकर देते है. आंगन में रंगोली डालते थे अब स्टिकर आयी है. इसी को डालते है.

पंचमी के नारियल (खाकर) उंडी खाते है नाग को दूध डालते है कुछ जगह जीव सहित नाग जीवंत नाग को दूध डालते है। आजकल इस तरह दूध को न डालने को कहकर बच्चों को (गरीब) पिलाते है. आचरण में बेंदहम हुआ है।

कहना मानो

माता- पिता के बात कहना मानो
न सुनने की तरह जीवन व्यर्थ न करो
आगे दु:ख का अनुभव होगा
अभी जागृत हो जाओ ।।
दुष्टों के संग से कष्ट भोगोगे
दुनिया के रीति-रिवाज समझो
वैसे के लिए धोखा करते है
दोष डालते है तुम पर ।।
नीच लोगों का बात सुनकर
उच्च्य संग न भूलो
झूठ बोलकर मद्यपान करके
चोरी करके कर्म के पीछे न जाओ ।।
मर्म समझते हुए मानव बनो
चूहे के जैसे न रहो
श्रम से काम करते हुए
सत्य पालन करते हुए माता पिता का कहना मानों।

✍जे. वी. नागरलम्मा, कर्नाटक

भिक्षुकः सर, भिक्षा दे दो
लल्लूनामः तुम्हारे पास सौ रुपये का चिल्लर है क्या?
भिक्षुकः हां, है.
लल्लूनामः तो फिर सौ रुपये खर्च करों.

जे.वी.नागरत्नमा

शांति का कराह

✍वी.के.बालकृष्णन नायर

मुक्ति नहीं! जब तक-तब तक नर
का विश्वास सम हो!
अखिल विश्व में शांति धरा बहाव न हो।
मानव क्या सोच रहे है आज?
भूचाल कैसे दूर करें!
मानव सोच रहें सुनामी!
और सोच रहे हैं तनहाई
कैसे हों आपस का सत्यानाश!
भूचाल चल रहा हैं प्रपंच पर
सूनामी चल रहा है, नियति का नियम है।
रही थी सत्य की कामना , जमानों से यहाँ।
आज आसत्य की प्रबंचयना हर कहीं।
आज हम क्या देख रहे है।
दिन-ब-दिन काटा-पीटा,
नही उजाला , भिनसार कही
अंधेरी दृढ़ होती जाती।
काम न पूरा होता कभी
छोड़ दिया भी न पूरा हो या अधूरा।।
बिना सत्य के यह संसार
बिना सपनो से भी यह संसार
अधूरा है, अधूरा है, अधूरा ही!
दुनिया बदलती है जल्द से जल्द, पर
बदलता इक बिकल्प मात्र न रहे।
एक सपना दूसरे सत्य को,
एक सत्य दूसरे सत्य को,
एक मिथ्या दूसरे मिथ्या को
एक पलायन है, बदलाव नही।
आज हर कही दरद भरा शब्द!
शांति! शांति! शांति!!!

क्या आप जानते हैं?

विश्व कप जितने के बाद भारतीय क्रिकेटर्स को दो-दो करोड़, कार और ढेरों ईनाम दिये गये, पर नक्सलियों से मुढभेड़ में शहीद हुये ७६ आर्मी के जवानों को सरकार ने १ लाख देने का सिर्फ वादा किया।

विमल कुमार वर्मा, इलाहाबाद९४५०४५०२६३

नूतन वर्ष की शुभकामना

नये वर्ष की नई किरण, नव जीवन का संचार करें।
वर्ष पुराना आशीष देता, मां तेरा कल्याण करें।।
जाग मुसाफिर खोल किवड़िया, द्वारे चांद-सितारे हैं।
नये-वर्ष की प्रथम किरण में, सूरज सहित पधारे हैं।।
तू दूर देश का एक पथिक, वह दूर देश से आया है।
सुख, शांति का एक पिटारा, संग में अपने लाया है।।
अस्त-उदय के बीच की रेखा, संधि काल कहाती है।
इन्हीं क्षणों की पावन बेला, वर्ष भर लहराती है।।

संदेश-

वक्त तेरा इंतजार करेगा, क्या वह तेरा गुलाम है।
एक हाथ में जन्नत जिसके, दूजे में शमशान है।।

अतः

कठोर कर्म की गर्मी आगे, कठिन वक्त पिघलता है।
वक्त से पहले किस्मत से ज्यादा, कर्मवीर को मिलता है।।

फिर-

मुसीबतें तुझसे हाथ मिला, तुझे आसमां तक पहुंचाएगी।
हाथ में होंगे चांद-सितारे, दुनिया शीश झुकाएगी

✍**राम कुमार वर्मा,** सरगुजा, छ.ग.

जागे मेरा देश महान्

जागे मेरा देश महान् यह भारत यह हिन्दुस्थान,
वेदज्ञान का, सूर्य उदय हो पुनः धर्म का हो सम्मान।
गौ पूजा, गायत्री का जप गंगा गीता के गुणगान,
पुनः जन्म लें इस धरती पर, कर्मवीर ऋषि मुनि महान्।
ढूँढे से भी ना दर्शन हों, दीन दुःखी के यहां कभी,
अन्न वस्त्र गृह आत्मज्ञान के भरे भण्डार सभी।
फले-फूले फिर से जगती पर, भारत देश यह विश्व महान्।।
भौतिक तम में भटक रहे, मानव को हम पुनः बचायें,
और पकड़ कर आत्मज्ञान के, राज मार्ग पर लायें।
पुनिः विश्व के प्राणिमात्र का अपने द्वारा हो कल्याण।।
विश्व गुरु सिंहासन पर, फिर बैठे भारत माता,
दिखे पुनः संसार चरण में, मां को शीश नवाता।
हिमगिरि के शिखरों पर फहरे, आर्य देश का अमर निशान।।४।।

✍**देवदत्त शर्मा 'दाधीच',** जयपुर, राजस्थान

भाग्य भरोसे

जो होता है, वह होने दो, यह पौरूषहीन कथन है
जो हम चाहेंगे, वह होगा, इन शब्दों में जीवन है।
भाग्य भरोसे रहो नहीं तुम, रच डालो खुद भाग्य नया
अपने हाथ, कलम से अपनी, लिख डालो इतिहास नया
बनो विधाता स्वयं भाग्य के, तब धोता वह चरनन है।
जो होता है, वह होने दो, यह पौरूषहीन कथन है
जो हम चाहेंगे, वह होगा, इन शब्दों में जीवन है।
एक लंगड़ा भी हिम्मत कर, चढ़ जाता सागरमाथा
पक्षाघात का रोगी एक, चल सके तान कर माथा
कर कर व्यक्त अव्यक्त ईश, अनपढ़ कबीर ही गाता
सूरदास सा कोई अंधा, जब रचे कृष्ण की गाथा।
अँगुलि दाँत के नीचे अपनी, क्यों रखता तब जन जन है?
जो होता है, वह होने दो, यह पौरूषहीन कथन है
जो हम चाहेंगे, वह होगा, न शब्दों में जीवन है।
जोश होश जब हाथ मिलाते, तब क्या है शेष असम्भव?
भर साहस मन, कदम बढ़ाते, तब जग में सबकुछ सम्भव
जो दृढ़-निश्चय करते पाते, मान, समृद्धि, धैन वैभव
जो चलते रहते बिना थके, वे पार करें, सागर भव
शूरवीरता का परिचायक, तो केवल समरांगण है।
जो होता है, वह होने दो, यह पौरूषहीन कथन है
जो हम चाहेंगे, वह होगा, इन शब्दों में जीवन है।
क्या भाग्य भरोसे बैठ सिंह, भोजन अपना पा सकता?
बिना चढ़े ही एवरेस्ट क्या जीत कभी कोई सकता?
युद्ध स्थल में लड़े बिना क्या जीत युद्ध कोई सकता?
क्या बिना पढ़े ही यह मानव, ज्ञानी पंडित बन सकता?
सिर्फ आलसी कामचोर ही, नित जाते भाग्य शरण है।
जो होता है, वह होने दो, यह पौरूषहीन कथन है
जो हम चाहेंगे, वह होगा, इन शब्दों में जीवन है।

✍ **अमरनाथ,** लखनऊ, उ.प्र.

जरा सोचिए......?

✍उत्तर प्रदेश की दलित गरीब की बेटी, कभी प्राईमरी में अध्यापक रही बहन सुश्री मायावती सालाना २४ करोड़ रुपये आयकर देती है. यानी बहन जी ने अपने कार्यकाल में १ अरब २० करोड़ रुपये केवल आयकर दिए. है न गरीब, दलित की बेटी क्यों भाईयों?

✍अन्ना टीम वहीं जाकर वोट देने की अपील करती है जहां कांग्रेस कमजोर है? क्या ये लोग राजनीति में आने को आतुर है?

✍भ्रष्टाचार के खिलाफ अपने को लड़ने वाली अन्ना टीम ने हिसार में सबसे भ्रष्ट नेता को जिताने में पूरा सहयोग किया. दाउजी

गज़ल

पोर-पोर में दर्द लिये।
लौटा हूँ खूब गर्द लिये।।
मेरे चेहरे को पढ़ लो।
फिरता हूँ मैं फर्ज लिये।।
कैसा जीवन कैसी सांसे।
मौत से हूँ बस कर्ज लिये।
हक की बात नहीं करता।
कांधे पर हूँ फर्ज लिय।।
वैसे तो चंगा हूँ लेकिन।
दिल में हूँ एक मर्ज लिए।।
कल आया था कासिद 'गैर'।
खत के संग कुछ शर्त लिए।।

✍अनुराग मिश्र 'गैर', बिजनौर, उ.प्र.

ग़ज़ल

रहे यू ही मौहब्बत में नाकाम शायद।
था नजरों में हर वक्त अंजाम शायद।
छलकने लगे थे हवाओं में सागर।
कोई ले रहा था मेरा नाम शायद।
वही बेकरारी वही हिज्र का गम।
पलट आयी है फिर शाम शायद।
दुआ दे हमारी मौहब्बत को जालिम।
नही तो तू रह जाता गुमनाम शायद।
कई रोज से हंस के मिलते है फरहत।
उन्हे पड गया है कोई काम शायद।

✍फरहत जमा खान, सागर,उ.प्र.

++++++++++++++++++++

स्वत्व नहीं है।

जीवन में कुछ तत्व नहीं है,
शेष कहीं अपनत्व नहीं है।
सब काला सफेद है लेकिन,
सत्य नहीं है, सत्व नहीं है।
बच्चों का दुर्भाग्य देखियें,
माँ तो है मातृत्व नहीं है।
दिशाहीन है देश समुचा,
नेता हैं, नेतृत्व नहीं है।
अविवाहित संग संग रहने में,
सब कुछ है पर स्वत्व नहीं है।
व्रत उपवास तपस्या पूजा-
कुछ कर लो अमरत्व नहीं है।
सकल पदारथ है हितेश पर,
सबको यह प्राप्तत्व नहीं है।
साथ-साथ रहना कलुषित है,
पति नहीं पत्नीत्व नहीं है।

✍हितेश कुमार शर्मा,बिजनौर, उ०प्र०

तरीका

यदि जीवन में सफल होना हो तो
सम्मान करना सीखिए
यदि जीवन में असफल होना हो तो
अपमान करना सीखिए।

✍डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा, ग्वालियर, म.प्र.

दर्दे बयां

कुछ वतन को बचाने में लगे हैं,
कुछ वतन को मिटाने में लगे हैं।।
कुछ दर्द के लिए फिरते पेट भरने को,
कुछ दीमक बन, खजाने में लगे हैं।।
कुछ भिड़े हैं, भ्रष्टाचार मिटाने को,
कुछ खुलकर टांग अड़ाने में लगे हैं।।
कुछ को अयोध्या, मथुरा, काशी की चिन्ता,
कुछ चर्च, काबा बनाने में लगे हैं।।
कुछ वस्त्र खरीद नहीं सकते बेचारे,
कुछ, कपड़े उतार, अंग दिखाने में लगे हैं।।
कुछ तो शहीद हो रहे हैं सरहदों में,
कुछ उनके कफन को भुनाने में लगे हैं।।
गरीब के मत्थे थोपे छब्बीस रुपये,
कुछ लाख रुपये, वेतन बढ़ाने में लगे हैं।।
पोस्ट ग्रेजुएट सड़क पर भीख मांग रहे हैं,
चौथी फेल को मुखिया बनाने में लगे हैं
जिनके पुरखों ने की आजादी की खिलाफत,
उन्हीं को हम मंत्री बनाने में लगे हैं।।
नेक, धर्मी, ईमान की छीछालेदर,
कुछ टेढ़ी पूंछ, गुर्राने में लगे हैं।
गरीबों के नाम नई योजना बना,
चुनाव का खर्च जुटाने में लगे हैं।।
कलेक्टर, एस.पी. हो गए बंधुआ मजदूर
अंगूठ छाप हुक्म सुनाने में लगे हैं।।
'राजगुरु' लम्बी कविता मत लिखिए,
उनके गुण्डे चुप कराने में लगे हैं।।

✍आचार्य शिवप्रसाद सिंह राजभर, जबलपुर, म.प्र.

संसद

सुमुखि! अब तो प्रणय का वरदान दे दो।
जल उठें मन-दीप, ऐसी
मदिर-मधु मुस्कान दे दो।
अधखुली पलकें झुकाकर,
प्रीति का अनुमान दे दो।
सुमुखि! अब तो...............।।
दीप बनकर मैं, तेरे
द्वारे जलूंगा।
पथ के कांटे दूर, सब-
करता चलूंगा।
मानिनी! कुछ मुस्कुराकर,
मिलन का सुख-सार दे दो।
सिर झुकाकर, कुछ हिलाकर,
मान का प्रतिमान दे दो।
सुमुखि! अब तो...............।।
तुम कहो तो मैं,
प्रणय की याचिका का।
प्रार्थना स्वर-पत्र,
तेरे नाम कर दूं।
तुम को हो स्वीकार, अर्पित
ये हृदय के पुष्प कर दूं।
भामिनी! कुछ गुनगुनाकर
गीत का उनमान दे दो।
सुमुखि! अब तो...............।।
पास आओ, मुस्कुराओ,
गुनगुनाओ।
कुछ कहो, कुछ सुनो
कुछ पूछो, बताओ।
तुम रूको तो मैं,
मिलन के स्वर-सजाऊँ।
तुम कहो तो मैं,
प्रणय गीत सुना सुनाऊँ
कामिनी! इस मिलन पल को,
इक सुखद सा नाम दे दो।
सुमुखि! अब तो...............।।

✍डॉ०श्याम गुप्त, लखनऊ, उ.प्र.

बुद्धि-बल और पराक्रम के प्रतीक-श्री हनुमान जी

✍ देवदत्त शर्मा दाधीच,
जयपुर, राजस्थान

**'अतुलित बल धामं हैमशैलाभदेहं,
दनुजवनकृशानं वानराणामधीशं,
सकल गुणनिधानं वानराणामधीशं,
रघुपति प्रियभक्तं वातजांत नमामि'**

भारतीय संस्कृति विश्व के समस्त संस्कृतियों से अधिक प्राचीन एवं श्रेष्ठ है. इसी कारण जगत गुरू की उपाधि से विभूषित है. त्रेता और द्वापर में अनेक पुराणों एवं पौराणिक कथाओं की रचना हुई और देवी-देवताओं की संख्या भी ३३ करोड़ हो गई. गोस्वामी तुलसी दास जी के समय रामचरितमानस की रचना हुई और उसी समय से श्री हनुमान जी का व्यापक प्रचार प्रसार हुआ. काशी के संकट मोचन, प्रयाग के लेटे हुये हनुमान इसके उदाहरण है. कन्याकुमारी से कश्मीर तक जितने हनुमान मंदिर है उतने अन्य किसी के नहीं हैं. हनुमत उपासना राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता का प्रतीक है. हनुमान चालीसा एवं हनुमान अष्टक व बजरंगबाण में उनकी गाथा भरी पड़ी है. समस्त अमंगल के विनाशक मंगलमूर्ति भक्तवर श्री हनुमानजी का चरित्र परम पवित्र, परम आदर्श तथा कल्याणमय है. बल और पराक्रम के प्रतीक, साधु, संत, देवता, भक्त एवं धर्म की रक्षा करने वाले हैं. श्रीराम के सर्वोत्तम दास-भक्त है. श्री हनुमानजी रूद्र-शंकर के अवतार है. इनमें शूरता, वीरता, पराक्रम के प्रतीक, साधु, संत, देवता, भक्त एवं धर्म की रक्षा करने वाले हैं. श्रीराम के सर्वोत्तम दास-भक्त है. श्री हनुमानजी रूद्र-शंकर के अवतार हैं. इनमें शूरता, वीरता, पराक्रम, दक्षता, बुद्धिमता, विद्वता, सरलता एवं सौम्यता देखने को मिलती है. गुरू-रूप में भी इनकी अराधना करते हैं.

**'मंगलमूर्ति मारूति नंदन,
सकल-अमंगल-मूल-निकंदन,
पवनतय सन्तन हितकारी हृदय
विराजत अवधबिहारी.'**

समुद्र को लांघकर लंका जाना, सीता का पता लगाना, लंका को जलाना,

संजीवन बुटी लाना, लक्ष्मण को प्राणदान देना, महाबली अजेय दुष्ट राक्षसों को मारना आदि ये सब उनके शौर्य व पराक्रम की बात हैं. तुलसीदास जी ने कहा है-**जय जय जय हनुमान गुसाई, कृपा करो गुरूदेव की नाई'** भगवान राम के परम भक्त है, यदि भक्त को अपने हृदय में बसा लेवें तो भगवान स्वतः ही हृदय में विराज जाते हैं, इसलिये गोस्वामी जी ने हनुमानजी से प्रार्थना की.

'पवनतनय संकट हरन, मंगल मूर्तिरूप, रामलखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप'

इतिहास पुराणों के अनुसार भगवान श्रीराम एकादश सहस्त्र वर्ष तक पृथ्वी पर शासन कर रामराज्य की स्थापना की. श्री हनुमानजी उनकी समस्त लीलाओं में सेवक के रूप में उपस्थित रहे. श्रीराम लब लीलासंवरण के समय साकेतधाम को प्रस्थान करने के लिए उधत हुए तो उन्होंने श्री हनुमान, विभिषण, जामवंत द्विविद को पृथ्वी पर रहकर रामकथा को प्रचार-प्रसार में रहने को कहा और विशेष कर हनुमानजी को बोले की तुम कथा में रूचि रखकर उसे सुना-सुनाया करों व श्री हनुमानजी ने प्रभु की आज्ञा शिरोधार्य की. कपिश्रेष्ठि से सम्बोधान किया और कहा कि तुम्हारे उपकारकर्म अनन्त है. इन सबका प्रत्युपकार सम्भव नहीं है जब तक मेरी कथा संसार में रहेगी तुम्हारी कीर्ति अमिट रहेगी.

श्री हनुमानजी की पूजा से सभी संकल्प पूरे होते हैं. कलियुग में कल्याण हेतु संकट मोचन हनुमानजी का प्रारब्ध, पुरूषार्थ, उर्जा शक्ति, कर्मशक्ति और अभयदाता के रूप में जानते हैं. पराशर सहिता में मंगल ग्रह के अतिपति हनुजान जी महाराज ही स्वयं मंगल मूर्ति है. अष्टसिद्धि, नवनिधि के दाता, नवधा भक्ति की सम्पूर्णता के प्रतीक है. श्री हनुमानजी भगवान आदित्य और देवता बृहस्पति के तेजस्विता रूपी ज्ञान से वैभव और अभय के दाता भी हैं. 'ऊँ हनुमते नमः' हनुमान चालीसा, हनुमानाष्टक, बजरंगबाण और सुन्दरकांड को पढ़ने से पूर्ण सफलता मिलती है. श्री हनुमानजी

को दो रूप में मान्यता है वीर हनुमान व दास हनुमान. इनकी पूजा का प्रचुर प्रचार श्री गोस्वामी तुलसीदास जी को जाता है. वैसे समर्थ गुरू रामदास भी व शिवाजी भी इसी श्रेणी में आते हैं. प्रत्येक मंगल व शनि को मंदिर में भक्तों की भीड़ दर्शन व पूजा हेतु रहती है.

महावीर श्री हनुमानजी एक उच्च कोटि के आदर्श कर्मयोगी है. कर्त्तव्यभिमान हनुमान जी को छु तक नहीं सका. इन्होंने इतने विरोचित्त कर्म किये की महावीर शब्द इनका वाचक बन गया. महावीरता का श्रेय स्वयं कभी नहीं लिया. सम्पूर्ण श्रेय अपने ईष्ट श्रीराम को दिया. भगवान की सेवा के लिए ही अवतरित हुये हैं. अपने प्राणों की भी तनिक चिंता न करते है-लंका यात्रा के समय सुरसा परीक्षा लेने आई तब वे उसका भोजन बनने को राजी हो गए और बोले-**'राम काज करि फिरि मैं आवौं, सीता कई सुधि प्रभुहिं सुनाओ'** लंका दहन करके हनुमान जी जब आये तब श्रीराम ने पूछा जिस लंका की रक्षा स्वयं रावण कर रहा है. उसको तुमने किस प्रकार जलाया तब हनुमान जी ने उत्तर दिया **'सो सब तब प्रताप रघुराई, नाथ न कछु मोरि प्रभुताई'** शंकरजी ने वानर रुप धारण किया क्योंकि वे श्रीराम को अपना परम उपास्य एवं इष्ट देवता मानते हैं. इसकी सम्पूर्ण कथा रामायण आदि में हैं. प्रेममय विशुद्ध सेवक का रूप धारण करके उनकी सेवा के लिए अंजना के गर्भ से प्रकट हुये. उनके पिता केसरी थे, इसलिये इन्हें शंकर सुवन केसरी नंदन कहते हैं.

चैत्र शुक्ला पूर्णिमा मंगलवार को उनका जन्मदिन माना जाता है. इसी दिन पूरे विश्व में हनुमान जयन्ती मनाई जाती है. बाल्मिकी रामायण में लिखा है कि जन्म होते ही महावीर को भूख लगी. भूख से व्याकूल होकर हनुमान ने उगते हुए सूर्य को जिसका लाल रंग था फल समझकर ग्रास कर लिया उसी दिन राहू सूर्य को ग्रसने आया तथा सूर्य ग्रहण अमावस को होता है. 'व्रत-रत्नाकर' में कार्तिका कृष्ण चतुदर्शी मंगलवार को हनुमानजी का जन्म लिखा है. श्री मन्नाराण्यण के मोहिनी रूप को देखकर शिवजी का तेज विर्शीण हो गया था, जिसे ऋषियों ने पत्रपुटक में रख दिया था. समय से भगवान शिव की अष्टमूर्तियों में विराजित दिव्य-विभूति वायुदेव ने उस शिव तेज को केसरी बानर की धर्मपत्नि अंजना के कानों द्वारा उनके देह में प्रविष्ट करा दिया. शिवजी ने वरदान दिया कि हमारे तेज से तुम्हें सर्वगुण सम्पन्न दिव्य पुत्र की प्राप्ति होगी. श्री हनुमानजी सभी प्रकार से सर्वदा पूज्य, वन्दनीय एवं स्मरणीय है. जय श्रीराम-जय श्री हनुमान.

९वें साहित्य मेला के लिए सम्मानितों की सूची घोषित

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद की सम्मान समिति की एक बैठक ११ दिसम्बर २०११ को खुसरो बाग में हुई. बैठक में निर्णायक मंडल के निर्णय की पुष्टि की गयी. बैठक के बारे में जानकारी देते हुए सम्मान समिति की अध्यक्षा विजय लक्ष्मी विभा ने बताया कि सुश्री बी.एस.शांताबाई, प्रधानसचिव, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बेगलौर का अभिनन्दन, हितेश कुमार शर्मा, बिजनौर, उत्तर प्रदेश को साहित्य गौरव, डॉ० अशोक पाण्डेय 'गुलशन', बहराइच, उत्तर प्रदेश को काव्य रत्न, सुचित्रा गोइन्दी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश को साहित्य गौरव की मानद उपाधि, डॉ०प्रमोद कुमार श्रोत्रिय, पिथौरागढ़, उत्तराखंड व डॉ० विजयालक्ष्मी नारायण रामटेके, नागपुर, महाराष्ट्र को शिक्षक श्री, श्री ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी, उत्तर प्रदेश को डॉ०किशोरी लाल सम्मान, डॉ० राम नारायण सिंह 'मधुर', वाराणसी, उत्तर प्रदेश को कैलाश गौतम सम्मान, डॉ०राम अवतार शर्मा, आगरा, उत्तर प्रदेश को राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान, श्री हरिहर चौधरी, गंजाम, उड़ीसा व सुनील पारिट, बेलगाम, कर्नाटक को हिन्दी सेवी सम्मान, श्री सतीश शर्मा, मैनपुरी, उत्तर प्रदेश को पुलिस हिन्दी सेवी सम्मान, डॉ० श्याम गुप्त, लखनऊ, उ.प्र. ,श्री शिवानन्द सिंह 'सहयोगी', मेरठ, उ.प्र., श्री शिवकरन सिंह, हमीरपुर, उ.प्र.श्री गोपाल कृष्ण भट्ट, कोटा, राजस्थान, श्री बी.एन.सागर, पीलीभीत, उ.प्र., श्री नवल जायसवाल, भोपाल, म०प्र० को विहिसा अलंकरण, देवेन्द्र कुमार मिश्रा को राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान प्रदान किया जाएगा.

हिन्दी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्र/छात्रा को दिया जाने वाला हिन्दी उदय सम्मान सुश्री वै.एस.सरस्वती, तुमकूर कर्नाटक, शिवानी श्रीवास्तव, इलाहाबाद को प्रदान किया जाएगा.

संस्थान के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी ने बताया कि पत्रिका की तरफ पूरे वर्ष में उत्कृष्ट लेखन के लिए दिया जाने वाला स्नेह अलंकरण देवदत्त शर्मा दाधिची-राजस्थान, आचार्य शिव प्रसार राजभर-म०प्र०, प्रोमिला भारद्वाज, हि०प्र०, रमेश चन्द्र त्रिवेदी-पीलीभीत, डॉ० नलिनी विभा नाजली, हिमाचल प्रदेश को प्रदान किया जाएगा. सभी सम्मानित होने वाले साहित्यकारों को डाक से सूचना भेज दी गयी हैं. अगर आपको सूचना न मिली हो तो कृपया ३० जनवरी २०१२ के पूर्व कार्यालय में संपर्क कर लेवे. सभी साहित्यकारों व प्रविष्टि भेजने वालों साहित्यकारों को नववर्ष-१२ की हार्दिक शुभकामनाएं

युवा रचनाकार

गीत

दूर बजी शहनाई मनुवा लगा गीत गाने।
शहनाई की धुन सखे! मन को दे उल्लास।
पिया मिलन होगा, मिलन बेला आयी पास।।
सुनो सखे! अब तो मन को लगा शीत भाने।
खुशियों की सौगात बांटिए, कहती शहनाई।
मन प्रसन्न रखिए, सुखद जीवन की सच्चाई।।
दुखी हृदय न भाता, गाओ मधुर-मधुर गाने।
रूप-रंग का भेद कभी भी नहीं मानती प्रीत।।
वो लगता है भला, पे मनुवा जिसे मीत माने।
मन के भावों को अभिव्यक्ति, दे रही शहनाई।
तुझे पुकारें गीत मेरे, आ मितवा हरजाई।।
लगन प्रीत की, इस जग की, नहीं रीत माने।

डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल', बिजनौर, उ.प्र.

विकसित

किसान आत्महत्या,
जवान बगावत
और शहादत के शिकार
युवा बेरोजगार
पुलिस का हर ओर अत्याचार
गुंडो की हफ्तावसूली
हर घर में चोरी
दंगा-फसाद, धार्मिक फसाद
दहेज बिना कुंवारी बैठी लड़की
कहां है विकास?
हर ओर पिछड़ा और
असभ्य समाज
हां अश्लीलता, अनाचार
बढ़ते बलात्कार
लड़कियों के एम एम एस
नीली फिल्मों का बोलबाला
बेईमानों का जयकारा
भ्रष्टाचार का नक्कारा
जाति, धर्म, भाषा के बढ़ते झगड़े
पश्चिम की नकल
इसमें उत्तरोत्तर चहुंमुखी विकास
हुआ है अगर ये विकास है
तो भारत सबसे उन्नत
और विकासशील देश है।

जन सूचना

०१ मतदान अवश्य करें।

०२ मतदान सोझ-समझ कर करें।

०३ एक बार मौका गया तो पांच साल सिर्फ पछताने के कुछ हाथ नहीं लगेगा।

०४ प्रत्याशियों से मतदान के लिए कोई सामग्री (शराब, कपड़े पैसे आदि) न लेवे।

०५ मतदान अपनी स्वेच्छा से करें।

०६ धर्म/जाति/सम्प्रदाय के नाम पर नहीं बल्कि सही प्रत्याशी को देखकर मतदान करें।

०७ जहां तक हो सके स्वच्छ, ईमानदार, छवि वाले प्रत्याशी को ही वोट करें।

०८ जहां तक सम्भव हो अपना मत राष्ट्रीय पार्टियों को ही दे। राष्ट्रीय पार्टियां ही देश हित में दूरगामी निर्णय ले सकती है छोटी पार्टिया नहीं. छोटे-छोटे दल केवल अपने फायदे के लिए सौदा करेंगें, आपके क्षेत्र का विकास नहीं करेगे।

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
इलाहाबाद द्वारा जनहित में जारी

ख्याली पुलाव

जनता मात्र
छप्पन भोग, पुलाव
और प्रजावत्सल राजा
मात्र ख्याली पुलाव।

प्यार

मत रखो हिसाब
मैं बेहिसाब
करता हूँ तुमसे प्यार।

देवेन्द्र कुमार मिश्रा, छिन्दवाड़ा,म.प्र.

भूख

मोहन तिवारी 'आनन्द'
भोपाल, म.प्र.

मन्दिर में भारी भीड़ इकट्ठी हो चुकी थी फिर भी और आगन्तुकों का रेला चला ही आ रहा था। फल, मिठाइयाँ, रूपये, चादर, फूल मालाएँ चढ़ाने की होड़ लगी थी. पुलिस भीड़ को नियंत्रण करने में असफल और पण्डे चढ़ोत्री लेने में व्यस्त. तभी वह बोली–
''दे दे बाबू, भगवान के नाम पर दे दे, दो दिन से भूखी हूँ.''
''शर्म नहीं आती इतनी हट्टी कट्टी है, जवान है, काम क्यों नहीं कर लेती ?'' गुस्साते हुए गिरधारी बाबू ने नसीहत भरे स्वर में कहा और मन्दिर की सीढ़ियों पर माथा टेककर मन्दिर में प्रवेश कर गए.
घंटियाँ बज उठी, आरती होने लगी। आँखें मूंद कर लोग भजन गाने लगे. जय जयकारे लगने लगे। प्रसाद चढ़ा लोग प्रसाद लेकर सीढ़ियों पर मत्था टेक कर विदा होने लगे. वह याचना का भाव संजोये हाथ फैलाए एक कोने में खड़ी करूण आवाज में कह रही थी, ''दे दे बाबू, भगवान के नाम पर ही दे दे, दो दिन से भूखी हूँ.''
मन्दिर के पट बन्द कर पुजारी ने मुख्य द्वार को बंद किया. ताले तथा मंदिर की देहरी के पैर छुए और थैला उठाकर जैसे ही चलने के लिए मुड़े, उसे कौने में खड़ी देख, खौल उठे. छड़ी खीचकर दौड़े, छड़ी की मार के भय से वह भाग खड़ी हुई. रिपट कर गिर पड़ी। पुजारी ने पीठ पर छड़ियों की झड़ी लगा दी.
''बोल और चढ़ेगी मंदिर की सीढ़ियाँ? चंडालिन कहीं की. मंदिर अपवित्र करती है. शर्म नहीं आती, अछूत दुष्ट.''
''मत मारो पुजारी जी, बेचारी अनाथ है, भूखी है. आपतो संत हैं, दया के सागर है.'' मंदिर के चौकीदार किशोरी लाल ने पुजारी जी को समझाते हुए कहा.
''तू क्या देखता है यहाँ? कितनी वार कहा कि भिखारियों को मन्दिर में न घुसने दिया कर. लगता है तुझे भी हटाना पड़ेगा. पुजारी कार में बैठकर चल दिया। वह उठी सिसकती हुई गली के अन्धकार में ओझल हो गई.
गिरधारी बाबू भवन बनाने का ठेकेदार है. सुरखी उसके कथन को सीख मानकर उन्ही के पास काम मांगने पहुँची ओर विनीत भाव में बोली.
''बाबू मुझे काम पर रख लो।''
''तू क्या काम करेगी, भाग यहाँ से.'' गिरधारी ने उसको डांटते हुए कहा.
''बाबू में सब कुछ करने को तैयार हूँ, इस पापी पेट के खातिर. दो रोटी के खातिर। लाज ढकने के लिए फटे पुराने कपड़ों के खातिर. आप ही ने तो कहा था, 'काम क्यों नहीं कर लेती.'' सुरखी ने गिड़गिड़ाते हुए कहा–''ठीक है, चल लग जा.'' एक कटीली मुस्कान लेते तिरछी आँखों से निहारते हुए गिरधारी ने उसकी ओर भूखे भेड़िये की तरह देखा शाम ढल गई थी. मजदूर अपने अपने घर की ओर चल दिए थे. वह अभी भी ईटो के टुकड़े इकट्ठे करने में जुटी थी.
''तगाड़ी धो डाल. सामान इकट्ठा कर झोपड़ी में रख दे.'' मेठ ने कहा.
उसने चुपचाप तगाड़ी धोई, सामान समेटा, और मेठ के पास जाकर वोली, ''कहाँ रखनी है बाबू ?''
''इतना भी नही समझती? जा रख आ वहाँ, रोज रोज बताना पड़ेगा क्या?'' श्याम लाल ने रौब दिखाते हुए कहा। सामान रखकर वह चुपचाप खड़ी हो गई.
''क्यों घर नहीं जाना है?''
''बाबू कुछ दे दो, भूखी हूँ.'' हाथ बढ़ाते हुए उसने गिड़गिडाते हुए कहा।
''आज कुछ नहीं मिलेगा. हफ्ता पूरा होने पर ही हिसाब होता है, जा भाग. पगली है क्या. समझती नहीं कहते हुए मेठ श्यामलाल चल दिया।

दिन भर काम से थकी, भूख से बेहाल सुरखी के पांव आगे नहीं बढ रहे थे। हिम्मत करके वह धीरे धीरे आगे चल दी। पास में मजदूरों के झोपड़े थे। औरते खाना बना रही थी। मजदूर दारू पीकर झूमते हुए झोपड़ों की ओर बढ़ रहे थे। एक झोपड़ी से रोटी उछली, दो कुत्ते झपटे, साथ में वह भी. रोटी की छीना झपटी में उसके हाथ से खून बह निकला, किन्तु उसके हाथ रोटी लग गई। रोटी का आधा टुकड़ा मुँह में देकर वह एक कदम ही आगे नहीं बढ़ पाई थी कि पीछे से चोटी पकड़कर गाल पर जोर का थपाड़ा जड़ते हुए, दीनदयाल बोला–
''शर्म नहीं आती, भूखे कुत्ते की रोटी छीनते हुए।''
दीन दयाल ने उसके हाथ से रोटी का टुकड़ा छुड़ाकर कुत्तों की ओर फेक दिया. वह सिसकती हुई अंधेरी सुनसान गली में बढ़ गई.
सड़क पार करते हुए गिरधारी ने जैसे ही उसे देखा पास जाकर कार रोकी, और बोला–
''क्यों कहाँ जा रही है, कहाँ, रहती है?''
''मंदिर के पीछे लगे नीम के पेड़ के नीचे झोपड़ी है''
''खाना खाया ?''
''नहीं बाबू. मजदूरी हफ्ता पूरा होने पर मिलेगी.
''तब तक भूखी रहेगी ? ''
वह चुप थी, जैसे बोल अटक गए हों।
''मेरे साथ चल, मैं तुझे भरपेट खाना खिलाऊँगा।''
वह मौन अविचल खड़ी थी। गिरधारी ने उसके मौन को स्वीकृत मान कार में

कहानी

बैठा लिया. करीब एक घन्टा सड़क पर दौड़ने के बाद कार रूकी। वेटर ने सामान उठाया। होटल का एक कमरा बुक कराया. चाय का आर्डर देकर कमरे में प्रवेश किया.
''क्या नाम है तेरा ?''
''जी, सुरखी।''
''चाय पी लो, अच्छी तरह नहा धो ले, फिर खाना खायेगें।'' गिरधारी ने अपनत्व का भाव प्रदर्शित करते हुए कहा। भोली सुरखी रोटी की आशा में जल्दी नहा धोकर तैयार हो गई। जब वह बाथरूम से बाहर निकली तो गिरधारी ने उसे अपनी बाहों में भरते हुए कहा,
''देख, अब कितनी सलौनी लग रही है।''
''लो तुम भी पियो।''
''ये क्या है, बाबू ?''
''शरबत है। ''
''नही बाबू भूखे पेट पीना.''
''एक घूट लो, बड़ा मजा आयेगा।''
''मुझे मजे से क्या बाबू भूख बुझाने''
''तुम मेरी भूख और मैं तुम्हारी भूख''
''मैं समझी नहीं?''
''थोड़ी लो सब समझ जाओगी।''
''रोटी दोगे न बाबू ?''
''भर पेट, रोज, रोज.''
''तो लो।''उसने गट गट करके पूरा गिलास खाली कर दिया. नशे में धुत गिरधारी ने उसे जी भर नोचा और वह चुपचाप थी, रोज रोज रोटी की उम्मीद में.
''बाबू रात में खाना नहीं खाया?'' वेटर ने गिरधारी से आश्चर्य भरे ढंग से पूछा।
''मेडम सो गई थीं, सोचा जब जगेंगी तभी खालेंगे, बस सो गए.''
''चाय लाऊँ?''
''नहीं अभी नहीं! मेडम सो रही हैं. मै मन्दिर जा रहा हूँ. दर्शन करने के बाद ही चाय नाश्ता लेगें। तब तक वो उठ जायेंगीं।''
कार में बैठते हुए गिरधारी बाबू ने कहा।
''दो बज गए! न मैंडम उठी न बाबू लौटे? देख तो जाकर, कमरे में।'' मेनेजर ने कहा।
बेटर कमरे में गया। पलंग पर निर्वस्त्र पड़ी औरत को देखकर वह चीख पड़ा। होटल में भीड़ जुट आई। पुलिस ने लाष कब्जे में ले ली। लिखा पढ़ी चली। पोस्टमार्टम हुआ। लावारिस का अन्तिम संस्कार होटल मालिक ने कराया। सुबह चाय पीते हुए समाचार पत्र में खबर पढ़ी, -
बेचारी भूख के कारण मर गई।

ग़ज़ल

उस बेवफ़ा को गले से लगाकर देख लिया
होते हैं गुलाब में कांटे, आज़माकर देख लिया
दिल में और कोई आरजू बाकी बची नहीं
तारे को जमीं पर, सजाकर देख लिया
हुस्न पाबन्दे-रह-ओं-रस्मों बफ़ा होता नहीं, क्यों
मश-अले जां को जलाकर देख लिया
उम्र भर न दामाने-यार का हाथ आया
आरिजे-रोशन पर, अंजुम निसार कर देख लिया
दुश्मनी मुझसे थी, दिल से दिली रखने में
हर्ज़ क्या था, यार को समझकर देख लिया।

०२

जो बैठो तो, लिपटकर बैठो
न बैठो तो कुछ हटकर बैठो
यूँ पलट-पलटकर देखती हो क्या
बैठना है तो घूँघत उलटकर बैठो
ऐसे भी यह जगह नहीं अलग
बैठने का, बैठना है, सिमटकर बैठो
रेल की तरह निकली जा रहीं जिंदगी
कुछ करना है, तो झट कर बैठो
हमें क्या, तुम यहाँ बैठो या वहाँ बैठो
मगर जहाँ भी बैठो, डटकर बैठो

✍श्रीमती तारा सिंह, नवी मुम्बई

एस.एम.एस. रचना

'भूलकर हमें वो खुश रह जायेंगें, साथ में नहीं तो जुदाई में मुस्करायेंगें, खुदा उन्हें कभी दर्द ना दे, हम तो सह गये पर वो टूट जायेंगें।

++++++++++++++++++++++++++++++++++

वफाओं में मेरी इतना असर तो आये, जिन्हें ढूंढती है नजर वो नज़र तो आये, हम आ जायेंगे तुम्हारी पलक झुकाने से पहले, तुमने याद किया ये खबर तो आये।

++++++++++++++++++++++++++++++++++

अक्सर गुमसुम रहने वाले नग्में है हम। आपकी यादों में रहने वाले लम्हा है हम आप मेरे दोस्त हो तो इक बात तो बताओ. आज आपके होते हुए क्यों तन्हा है हम।

++++++++++++++++++++++++++++++++++

सर-ऐसी किसी जगह का नाम बताओ जिसे बनाया हो आदमी ने हो पर फिर भी वो वहां जा नहीं सकता.
बन्ता:(कुछ सोचकर)- लेडिज टायलेट

मो०जितेन्द्र सागर, ०८९५७१२४४६०

तनावजन्य व्याधियों का उपचार भी है विनम्रता

✍ सीताराम गुप्ता, दिल्ली

आपने कभी न कभी दवा का इंजेक्शन अवश्य लगवाया होगा. इंजेक्शन लगवाते समय प्रायःदर्द भी होता है. रोगी को दर्द कम हो इसलिए इंजेक्शन लगाते समय नर्स या डॉक्टर रोगी से कहते है कि शरीर को अथवा जहाँ इंजेक्शन लगना है. उस भाग को ढीला छोड़ दो. इसके लिए इंजेक्शन लगाने वाला बातचीत द्वारा रोगी का ध्यान और कहीं ले जाने का प्रयास करता है ताकि रोगी का ध्यान इंजेक्शन लगाने वाले स्थान से हट जाए और उस स्थान पर अतिरिक्त तनाव उत्पन्न न हो. इंजेक्शन लगाने के स्थान पर जितना अधिक तनाव या खिंचाव होगा इंजेक्शन लगाते सयम उतना ही अधिक दर्द होगा. इसके विपरीत यदि आप इंजेक्शन लगने के स्थान को अधिकाधिक ढीला छोड़ देते हैं तो दर्द होने का प्रश्न ही नहीं उठता.

ठीक यही बात जीवन-संग्राम जीतने या जीवन व्यतीत करने के संबंध में भी कही जा सकती है. जीवन में जितना अधिक तनाव उतना अधिक दर्द. जितना कम तनाव उतनी कम पीड़ा. तनाव का पीड़ा से सीधा संबंध है. आज हमारी अनेक बीमारियों का प्रमुख कारण तनाव ही है. तनाव को कम करके या समाप्त करके हम अनेक बीमारियों तथा पीड़ा से मुक्त रह सकते है.

हमारे भौतिक शरीर की तरह हमारे स्वभाव में भी तनाव नहीं होना चाहिए. तनाव का सीधा संबंध हमारे मनोभावों या मन में उठने वाले विचारों से है. भौतिक शरीर में तनाव न हो इसके लिए व्यक्ति की मनोदशा में परिवर्तन अनिवार्य है. व्यक्ति के मनोभाव सकारात्मक होंगे तो तनाव का प्रश्न ही नहीं उठता. ऐसी ही एक सकारात्मक मनोभाव है 'नम्रता'. व्यक्ति की जीभ अत्यन्त कोमल होती है. अतः चौबीसों घंटे तेज दाँतों के बीच रहकर भी अपना बचाव कर लेती है. इसी प्रकार विनम्र व्यक्ति तनाव से मुक्त रहकर न केवल अच्छे स्वास्थ्य का लाभ उठाता है अपितु समाज में आराम से गुजर-बसर कर लेता है. एक विनम्र व्यक्ति को यदि कोई बुरा-भला कह भी देता है तो वह ज्यादा दुखी नहीं होता. उसके तनाव में वृद्धि नही होती.

विनम्र व्यक्ति न केवल सबके प्रेम का पात्र बनता है अपितु व्यावसायिक दृष्टि से भी सफलता प्राप्त करता है जो व्यक्ति जितना अधिक विनम्र होगा वह उतना ही अधिक सीख पाएगा और जो जितना ज्यादा सीख पाएगा जीवन में आगे आएगा. दूसरों से सीखना है अथवा अपना काम निकलवाना है नम्रता रूपी आयुध का प्रयोग अवश्य कीजिए. यहाँ कहने का ये अर्थ नहीं है कि चापलूसी करें अथवा विनम्रता का ढोंग या नाटक कर रहे है तो उसको इतनी स्वाभाविक रूपांतरण है.

विनम्रता से तात्पर्य है वाणी की मधुरता और सहतजा वाणी की मधुरता और सहजता. विरोध को समाप्त करने में सक्षम है अतः विनम्र व्यक्ति समाज के हर अवरोध को सरलता से पार कर जाता है. कठिनाइयों के बावजूद कम पीड़ा होती है. वह जीवनरूपी धारा में सहजता से बहता हुआ अपने गंतव्य तक सकुशल पहुँच जाता है.

नम्रता का एक अर्थ है तरलता या कोमलता. धातुओं में प्रायः नम्रता या कोमलता का अभाव होता है. धातु कोमल नहीं होगीं अथवा पिघलेगी नहीं तो साँचे में ढालकर सुदर प्रतिमा का निर्माण कैसे होगा? अतः सुंदर प्रतिमा प्राप्त करने के लिए धातु को पिघलाला या नम्र बनाना आवश्यक है. धातु को बार-बार पिघलाँएगे लेकिन अपेक्षित तापमान तक नहीं पिघलाएँगे तो भी सारा प्रयास निरर्थक होगा. कम तापमान पर पिघलाएँगे तो भी.

एस.एम.एस. रचना

०१ दिल से ये दुआ है हमारी, जिन्दगी तुम्हारी संवर जाये. हर नजर में बस प्यार नजर आये, तुम्हें जिसकी तलाश है दोस्त, खुदा करे वो खुद तुम्हारी तलाश में आयें.

०२ गांधी जी ने शादी से पहले अपनी पत्नी कस्तूरबाजी को छोटा सा खत लिखा और कस्तूरबा जी बेहोश हो गई. 'डियर कस्तूरबा, आई लव यू' तुम्हारा बापू **मो०जितेन्द्र सागर, ०८६५७१२४४६०**

++

संता- न्यूजपेपर पढ़ रहा था.

बंता-कोई नई खबर है क्या?

संता-ये क्या, यू.पी. को ४ हिस्सों में कर दिया जायेगा.

बंता-जिस घर में औरत की चलती हो, ये तो होता ही है।

++

एक पागल आईना देखकर सोचने लगा, इसको कहीं देखा है. थोड़ी देर सोचने के बाद 'ओ तेरी' ये तो वही है जो मेरे साथ उस दिन बाल कटवा रहा था?

सुधीर कुमार, मो० ०६३०७७७६२३०

शुल्क

सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉक्टर मानवेन्द्र राय को जीवन का सबसे बड़ा झटका लगा जब उनकी पत्नी को यकायक वैराग्य सूझ गया. उन्होंने आश्रम जाने का तय कर लिया. मजबूरी में डॉक्टर राय को भी सब काम बन्द करके साथ जाना पड़ा. जाते-जाते वे सारी सम्पत्ति अपने इकलौते पुत्र के नाम पर कर गए.

पर डाक्टर राय का मन नहीं माना. वे वापिस लौट आए. लौटकर जीवन का दूसरा झटका लगा. पुत्र ने पिता को पहिचानने से इंकार कर दिया. डॉक्टर राय वापिस शून्य पर आ गए थे.

उन्होंने पुनः चिकित्सीय कार्य शुरु कर दिया. दो वर्ष में में उनकी स्थिति सही हो गई. एक दिन नर्स ने कहा, 'अगला मरीज स्वयम को आपका पुत्र बताते हैं.' डॉक्टर राय ने शांत मन से जवाब दिया, 'अन्दर भेज दो. उसका विशेष ध्यान रखा जाए. पर चिकित्सीय शुल्क अवश्य जमा करा लेना.'

✍ **डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा,** ग्वालियर, म.प्र.

स्वदेश

रीना की शादी अमेरिका निवासी निशान्त से हुई थी. उस समय उसकी आयु मात्र २१ बरस थी. वह शादी के बाद पति के साथ ही चली गई. पंजाबी परिवार की लड़की थी. घर वालों ने उसे बी.ए. करा दी थी. वहाँ जाकर थोड़ी-बहुत अंग्रेजी सीखकर उसने हाय-हलो से अपनी ज़िन्दगी बरस कर ली थी. जब कभी कोई रिश्तेदार उसे मिलने आता या फिर वहीं पर कोई भारतीय मिलता तो उसकी दिवाली सी मन जाती. वह भारत अपने पंजाब के बारे में बहुत से सवाल पूछ बैठती. उसकी आँखों से कई बार पानी टपक जाता. अब वह २ बच्चों की माँ बन चुकी थी. बच्चों को उसने बहुत अच्छे संस्कार दिये थे. आज उसके लड़के का एक रिश्ता भारत से आया है वह कुछ अजीब सी स्थिति में हो गई, पर उसने काफ़ी साहस जुटाकर अपने पति से बात की, ''मुझे अपने बेटे की शादी भारतीय लड़की से करनी है, हम लोग विदेशों की ओर कितनी जल्दी आकर्षित हो जाते हैं. तुम्हें पता है मैं कितनी घुटी हूँ यहाँ. यहाँ की बोलचाल, रहन-सहन और ऊपर से आबो-हवा व दिखावा सबने मेरी जान ले ली। बहुत कमा लिया पैसा. अब भारत वापस चलो. हम इस पैसे से वहाँ आसानी से जी सकते हैं. देश, लोग सब तो अपना है. बीजी-बाऊजी कितना तरसते हैं आपके लिए। निशान्त फटी आँखों से सब सुनता रहा. रात को उसने अपने दोनों बच्चों के सामने रीना की बात रखी. दोनों बच्चे माँ-बाप की बात से सहमत हो गये कि रीना के आँसू रोके नहीं रुके कि वो अब जिएगी अपना जीवन, अपने लोगों में, अपने देष में.

✍ **शबनम शर्मा,** सिरमौर, हि.प्र.

संस्थान के ६ दिसम्बर २०११ को १५वर्ष पूरे होने पर

सदस्यता अभियान में विशेष छूट

✍संस्थान के साधारण सदस्यों को हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' के तीन अंक, स्थायी सदस्यों को १२ अंक, आजीवन सदस्यों को ३६अंक, सरंक्षक सदस्यों को ६०अंक बिल्कुल मुफ्त
✍संस्थान के प्रकाशनों में 50प्रतिशत की छूट **✍हिन्दी की सेवा करने का सुनहरा अवसर ✍हिन्दी/अहिन्दी भाषियों का हिन्दी की सेवा करने का अद्वितीय मंच ✍अहिन्दी भाषियों को विशेष छूट ✍पूरे देश के साहित्यकारों से जूड़ने का सुनहरा अवसर**

संस्था का उद्देश्यः हिंदी को पूरे भारत की भाषा बनाना ० हिन्दी को राज-काज की भाषा बनाना ० समाज सेवा स्नेहाश्रम (हिंदी विश्वविद्यालय, वृद्धाश्रम, अनाथाश्रम)

पात्रताः कोई भी व्यक्ति जो हिंदी सेवी हो या हिंदी में अभिरुचि रखता हो.

आप अपनी सदस्यता राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता **सं०:एस.बी. 538702010009259** में **सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद** के नाम से भी जमा कर सकते है अथवा ६ ानादेश/डी.डी./चेक सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते है.

विशेषः यह छूट ०१ दिसम्बर २०११ से १५ जून २०११ तक के लिए मान्य होगी।

अधिक जानकारी जवाबी लिफाफे के साथ लिखेंः

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

एल.आई.जी-१४४/६३, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.

email: sahityaseva@rediffmail.com Mo.: (O) 09335155949, www.swargvibha.tk.com

जैन समाज का राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदानःशीला दीक्षित

नई दिल्ली, 'देश में जैन समाज ही एक ऐसा समाज है जो राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सौहार्द एवं उन्नतिशील राष्ट्र निर्माण में सहभागी रहा है. यह समाज राष्ट्र के हर संकट के समय मदद करता आया है.' श्रीमती शीला दीक्षित अपने निवास पर समाजसेवी, अध्यात्मनिष्ठ और सहृदयता के प्रेरक, अणुव्रत कार्यकर्ता एवं अहिंसाकर्मी स्व० श्री भंवरलालजी डूंगरवाल की पावन स्मृति में श्रीमती मंजुला भंसाली के संपादन में प्रकाशित स्मृति ग्रंथ **'श्रद्धा के भंवर'** का लोकार्पण करते हुए दिल्ली की मुख्यमंत्री अपने निवास पर श्रीमती शीला दीक्षित ने उपरोक्त उद्‌गार व्यक्त किए.

श्रीमती दीक्षित ने आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ की पावन स्मृति करते हुए कहा कि अणुव्रत आंदोलन ने देश में नैतिकता और चरित्र की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया है. स्व० भंवरलाल डूंगरवाल जैसे हजारों अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने अहिंसक समाज की स्थापना, समाज सुधार, नशामुक्ति, नारी-जागृति, संस्कार निर्माण इत्यादि मानवीय संकल्प को पूर्ण कर राष्ट्र में नैतिक और चारित्रिक मूल्यों को बल दिया है.

इस अवसर पर अ.भा. तेरापंथ युवक परिषद के पूर्व अध्यक्ष श्री सुखराज सेठिया ने कहा कि श्री भंवरलाल डूंगरवाल ने समाधिपूर्वक मृत्यु का वरण कर एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया. इस मायने में भंवरलालजी सौभाग्यशाली रहे कि उन्होंने अपने जीवन को ही नहीं मृत्यु को भी महोत्सव का रूप दिया.

स्मृति-ग्रंथ के संपादकीय सहयोगी श्री मुरलीधर कांठेड़ एवं श्री ललित गर्ग ने ग्रंथ की जानकारी दी. श्री पुखराज सेठिया ने कहा जैन समाज के लोगों ने अपनी प्रतिभा और मेहनत के जरिये सुदूर क्षेत्रों में जाकर न केवल व्यवसायिक कामयाबी हासिल की है वरन सेवा और परोपकार के कार्यों से जन-जन का मन भी जीता है.

इस अवसर पर मुकेश अग्रवाल एवं प्रवीण डूंगरवाल आदि भी उपस्थित थे.

लाल बिहारी लाल पर दुर्गम खबर का विशेषांक

नई दिल्ली से प्रकाशित दुर्गम खबर साप्ताहिक ने अपने ३८वें अंक को श्री लाल बिहारी लाल को समर्पित किया है. श्री लाल के ३८वें जन्म दिवस के अवसर पर प्रकाशित इस विशेषांक में श्री लाल की कुछ रचनाएं, उनका जीवन परिचय, साहित्यिक साधना, इंटरनेट पर, उनके द्वारा प्राप्त विभिन्न संस्थाओं से सम्मान पत्रों व कार्यक्रमों में सहभागिता के छाया चित्र भी प्रकाशित किए हैं. ६ठें व ७वें पृष्ठ पर अनेक विद्वजनों के विचार, उनका लाल के प्रति विचार प्रकाशित किया गया है. यानि कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि इस अंक के माध्यम से श्री लाल को जानने समझने का मौका मिलेगा.

साहित्यकार का सम्मान समाज का कर्त्तव्य-डा०गोयनका

नई दिल्ली. 'साहित्यकार समाज को आईना दिखाता है, उसका मार्गदर्शनप करता है. ऐसे में, समाज का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह साहित्यकार को सम्मानित करे.' उक्त बातें डॉ० कमल किशोर गोयनका ने 'कल्पांत' के 'पुष्प-मधुप' दंपत्ति विशेषांक के लोकार्पण समारोह में कहीं. आयोजन के मुख्यअतिथि डॉ० नरेन्द्र मोहन थे.

इस अवसर पर डॉ० हरीश नवल, डॉ०सुधा शर्मा, डॉ० रवि शर्मा, श्री मुरारी लाल त्यागी, डॉ०पूरन चंद टंडन, बाल स्वरुप राही, गुलाब खंडेलवाल, वीरेन्द्र प्रभाकर, बी. डी.बजाज डॉ० हरिसिंह पाल आदि उपस्थित थे.

डॉ० रवि शर्मा 'मधुप' सम्मानित

डॉ०रवि शर्मा 'मधुप' को राष्ट्रभाषा को उसके गरिमामय पद पर प्रतिष्ठापित करने के लिए श्रीनाथ द्वारा की ओर से 'हिंदी भाषा भूषण' की मानद उपाधि से विभूषित किया गया.

बाल एकांकी लेखनः एक चुनौती-प्रताप सहगल

नई दिल्ली. 'दृश्य श्रव्य तथा पाठ्य विधा होने के कारण नाटक लिखना अपने आप में एक कठिन कार्य है, उसमें भी बच्चों के लिए एकांकी लिखना और भी चुनौतिपूर्ण है. उपयोगी लेखन को जब कला की कसौटी पर कसकर प्रस्तुत किया जाता है, तो वह एक श्रेष्ठ रचना बनती है. यह चुनौतिपूर्ण कार्य डॉ० सुधा शर्मा बखूबी कर रही है. इसका प्रमाण उनका एकांकी संग्रह 'कुर्बानी रंग लाएगी' हैं. उक्त उद्‌गार साहित्यकार श्री प्रताप सहगल ने कुर्बानी रंग लाएगी के लोकार्पण के अवसर पर अध्यक्षता करते हुए कहीं.

कार्यक्रम में दिल्ली के पूर्व महापौर महेश चंद्र शर्मा, डॉ० शकुन्तला कालरा, डॉ० सतपाल कौर, अरबिन्द गौड़, डॉ० दिविक रमेश, डॉ० आशा जोशी, डॉ० शशी सहगल आदि उपस्थित थे. कार्यक्रम का संचालन बाल साहित्यकार रेणु चौहान ने किया.

विशेष सूचना

सम्मानित होने की सूचना तभी प्रकाशित की जाएगी जब आप सम्मान की छाया प्रति भी साथ में प्रेषित करेंगें।

चिट्ठी-पत्री

भाई द्विवेदीजी, नमस्कार
विश्व स्नेह समाज का, मिला अगस्त ११ अंक
शिक्षा-भ्रष्टाचार पर, मिले विचार निशंक
मिले विचार निशंक, विविध सामग्री पाई
सम्पूर्ण पारिवारिक पत्रिका है यह भाई
यह है 'अनिल' विचार, हमें इस पर है नाज़
करे निरन्तर प्रगति, पत्रिका विश्व स्नेह समाज

डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल',
धामपुर, बिजनौर, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++

सम्माननीय द्विवेदी जी

इधर के कई अंको को मनन करने के बाद ऐसा लग रहा है कि आपने पत्रिका में काफी परिवर्तन कर दिया है. धीरे-धीरे यह अपने नाम के अनुरुप विश्व बन्धुत्व की भावना को उजागर करती हुई समाज को नई दिशा देने के लिए पूरी तरह से अग्रसित है. यह अपने आप में एक अनोखा व अद्वितीय प्रयास हैं. वास्तव में समाज को ऐसी ही पत्रिकाओ की आवश्यकता है जो समाज को एक नई दिशा दे सके. आपने वर्ष २०११ में कई मुद्दों को लेकर विशेषांक, परिशिष्ट निकाले, सब अपने आपमें पठनीय व संग्रहीय अंक रहे. लेखों व कविताओं में कवियों, लेखको के विचार उच्चकोटि के रहे. इधर सभी अंक संग्रहणीय व पठनीय रहे. इस तरह के उत्कृष्ट व उत्तम प्रयास के लिए आपको तथा आपकी पूरी टीम को हार्दिक बधाई.

हरेराम पाठक, भोपाल, मध्य प्रदेश

++++++++++++++++++++++

सम्मानित पाठकों आपको पत्रिका के अंक कैसे लगे, क्या और सुधार किया जाए, क्या स्तंभ और इसमें डाले जाये अपने विचारों से हमें अवगत कराते रहें.

संपादक

दाउजी की डायरी

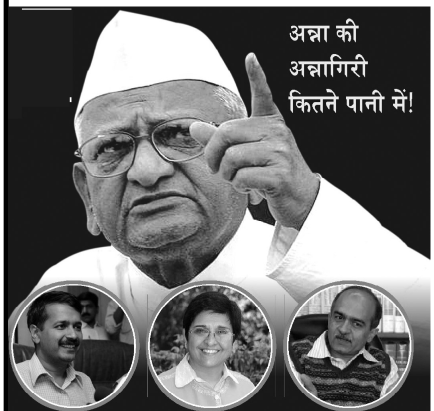

☞मैं कहता हूं बच्चा ६ महीने में नहीं ४ महीनें में पैदा करो?

और

बच्चा जैसा मैं चाहता हूं वैसा पैदा करो. नहीं तो मैं अनशन करूंगा, आंदोलन करूंगा, जेल भरूंगा.

☞बच्चा गोरा, स्वस्थ, बुद्धिमान, लम्बा होना चाहिए. अगर इनमें से बच्चे में कोई कमी हुई तो भी मैं अनशन, आंदोलन करूंगा.

++++++++++++++++++++++++++++++++++

अन्ना-स्वास्थ्य के चलते अनशन दूसरे ही दिन तोड़ा.

दाउजी-स्वास्थ्य या जनसमर्थन न मिलने के कारण. जब-जब सिविल सोसायटी के खिलाफ कुछ होता है अण्णा जी या तो मौन धारण कर लेते हैं या बीमार पड़ जाते हैं. और माहौल बदलते ही ठीक हो जाते हैं. जब घर में यह दुर्दशा हो गई तो अन्ना जी बाहर क्या होगा?

++++++++++++++++++++++++++++++++++++

अण्णा व उनकी टीम के सदस्यों ने कहा-'अब पांच राज्यों होने वाले विधानसभा चुनाव में गद्दारों(कांग्रेस) को वोट न देने की अपील जगह-जगह जाकर करेंगें तथा २०१४ में होने वाले लोकसभा चुनाव तक जनता को कांग्रेस वोट न देने की अपील करते रहेंगें।

दाउजी-अगर पांच राज्यों में कांग्रेस को पिछले चुनावों की तुलना में अधिक सीटे या अधिक मत मिल गये तो अन्ना व अन्ना टीम क्या करेगी?

☞आखिर असली चेहरा सामने आ ही गया-**राजनीति करने का**

++++++++++++++++++++++++++++++++++

☞लागता कि केजरीवाल व किरण बेदी अण्णा के ले डूबीहन.

✍दाउजी

समीक्षाएं

एक वकील साहित्यकार की आत्मकथा है :लघुकथा संग्रह कचहरी में कोहूनूर

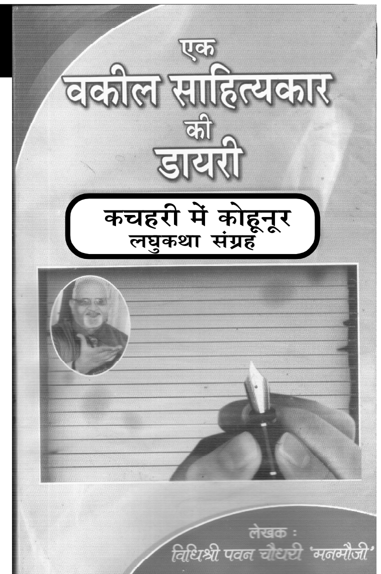

विधिश्री पवन चौधरी 'मनमौजी' जी के लगभग सभी किताबों में अंग्रेजी के शब्दों का बोलबाला कुछ अधिक ही रहा है. शायद ऐसा एक वकील होने के नाते हो या हमारी न्यायायिक प्रक्रिया का अंग्रेजियत में रंग में डूबा होने की वजह से हो. लेकिन प्रस्तुत संग्रह 'कचहरी में कोहिनूर' में, अन्य संग्रहों की अपेक्षा, अंग्रेजी के शब्दों का बोलबाला कम ही हैं. वैसे भी यह बात तो कटु सत्य है ही कि आदमी जिस व्यवसाय में रचा-बसा होता है उसका प्रभाव उसकी लेखनी/पारिवारिक जीवन, रहन-सहन में भी पड़ता है. शायद यही कारण है कि 'मनमौजी' जी की लघुकथाओं में न्यायिक शब्दों का, न्यायिक कार्यो से संबंधित कहानियों का बोलबाला है. वैसे अगर इसे लघु कथा न कहकर एक वकील पत्रकार/साहित्यकार की आत्म कथा कहना कुछ अधिक श्रेयष्कर प्रतीत होता हैं.

प्रस्तुत संग्रह में 'मनमौजी' जी ने लघुकथाओं के माध्यम से कहीं न कहीं आम आदमी के साथ घटती घटनाओं को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है. इन लघुकथाओं को पढ़कर ऐसा लगता है मानों हमारे आस-पास की कोई घटना हो. केवल न्यायिक कार्यो से संबंधित घटनाओं को छोड़कर. कुछ लघुकथाएं तो हमारी व्यवस्था पर भी गहरी चोट करती है. न्यायिक प्रक्रिया से प्रारम्भ हुई घटनाएं सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक दृष्टिकोण के विभिन्न पहलुओं को बड़े ही मार्मिक ढंग से बयां करती हैं. दिन-प्रतिदिन घटने वाली घटनाओं को मनमौजी ने इन लघुकथाओं के माध्यम से अपने शब्द कोश के सुंदर शब्दों की लर में पिरोकर एक बहुत ही खूबसूरत माला तैयार कर दी है.

इस संग्रह की पहली लघुकथा 'कचहरी में कोहिनूर' से चलें तो न्यायालयी कार्यो में बड़े पैमाने पर व्याप्त भ्रष्टाचार के बावजूद, ईमानदारी का दीपक जला रही है यह कहानी. 'खिलौना' में वर्तमान परिवेश में नवदम्पत्तियों में काम व शरीर को दुरुस्त रखने, समयाभाव के कारण बच्चे पैदा न करने की समस्या को इंगित करती है. वहीं 'मेरा परिवार' में बच्चों के मन में बचपन से एकल परिवार की सीख को बयां करती है. 'गांधीगीरी' में पत्रकारों को सत्य लिखने पर कैसी समस्या होती है इसका सजीव चित्रण नजर आता है. भला आज का पत्रकार, पत्रकारिता धर्म को कैसे निभा पाएगा. अंत की कुछ लधुकथाओं में दादा-नातिन संवाद के रूप में बहुत कुछ अनकही बातों को बड़े ही मजेदार तरीके से प्रस्तुत कर समाज को सीख दी है. 'बुरी आदत', 'अजूबा'. एक बानगी तौर पर 'मुर्दे की मर्दानगी' में भ्रष्टाचार पर कैसे चूटिल शब्दों में प्रहार किया है. 'मुर्दा चिता पर मस्त लेटा हुआ था. उस पर घी एवं सामग्री लगातार उड़ेला जा रहा था, आग की लपटें आसमान को लपकने के लिए आतुर थीं. लेकिन मुर्दा जलने का नाम ही नहीं ले रहा था. सहसा पंडित जी को उपाय सूझा. मुर्दे में खास क्या बात थी?

'बस इनकी एक ही खासियत थी, कि बिना कुछ लिये ये किसी का काम करने में विश्वास नहीं रखते थे, काम भले ही मामूली से भी मामूली हो.' पंडित जी ने मुर्दे पर श्रद्धानुसार, दुक्की, पंजी, डालने की पेशकश की. उधर नोटों की बरसात बंद हुई, इधर मुर्दे ने भी मर्दानगी त्यागने में सेंकड लिए.

इनके अतिरिक्त, 'महापुरुष की पहचान', 'अज्ञानी', 'पश्चाताप', 'सम्मान', 'मांग', 'भगवान', 'अंतर', 'नौकर', 'ड्राईविंग लाइसेंस', 'गणना', 'परिवर्तन', 'सार्थक सोच', 'कड़वा सच', 'नकली बालियां', 'सबसे सस्ती', 'रोटी बनाम जाति', 'पैसे का पेड़', 'गांधीगीरी-२', 'सर्वश्रेष्ठ प्राणी', 'साहित्यानुरागी' लघु कथाएं मुझे व्यक्तिगत रूप से बहुत अच्छी लगीं.

उम्मीद है आप पाठकों को भी यह लघु कथा संग्रह पसंद आएगा.

समीक्षकः डॉ०गोकुलेश्वर द्विवेदी
प्रकाशकः विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११
मूल्यः १५१/-रुपये मात्र

दूसरों में कमी ढूढने निकालने के बजाय अगर खुद के अंदर झांककर देखा जाए तो दुनिया हरी-भरी नजर आने लगेगी। दाउजी

समीक्षाएं

ठहर गया जल

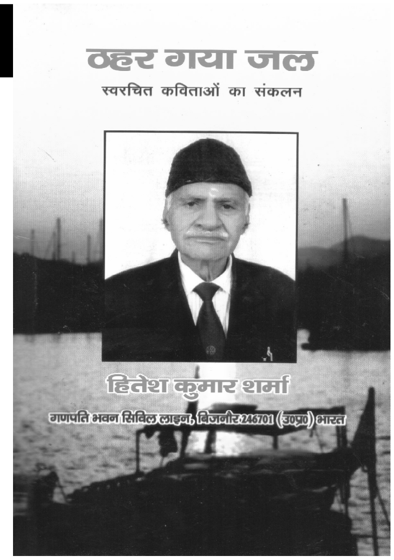

पेशे से अधिवक्ता श्री हितेश कुमार शर्मा का संभवतः यह ४०वां काव्य संकलन है. ७५कविताओं का यह नव्य प्रकाशन युगीन मानव के आचरण का प्रत्यक्ष प्रतिबिम्ब है. १४० पृष्ठों में प्रवाहित भाव-धारा कतई सतही नहीं है. भाव गाम्भीर्य ऐसा है जो मानव को सोचने-समझने और संभलने को उत्प्रेरित करता हैं. भावों की स्पष्टता तथा अभिव्यक्ति की व्यंजना संकलन को सुग्राह्य बनाती है. युगाचरण से पीड़ित कवि की बेलाग टिप्पणी देखिए-

'कब होगा मन्तव्य पूर्ण गन्तव्य मिलेगा,
भौतिकता, आध्यात्मिकता क्या अपनाऊं मैं.'

किंकर्त्तव्यविमूढ़ मानव के मन की विडम्बना मननीय है-

'सच बोलूं तो इस जग को स्वीकार नहीं हूं,
और झूठ मैं करता अंगीकार नहीं हूं।

मौन रहकर समय बिताना और भी दुष्कर है-

'चुप रहने पर लोग मुझे धृतराष्ट्र कहेंगें,
हूं केवल कर्त्तव्यमात्र अधिकार नहीं हूं!'

काव्य में प्रयुक्त प्रतीकों से भाव-बिम्बों का विधान प्रशंसनीय बन पड़ा हैं. इससे कवि की काव्य-रचना साफ-सुथरी एवं परिपक्व नज़र आती है. 'ठहर गया जल' समीक्ष्य कृति की छब्बीसवीं कविता है. कविताएं व्यंग्य प्रधान है जिससे व्यंजना सशक्त बन गई हैं. ठहरे हुए जल में किस प्रकार हलचल मची है, किंचित बानगी द्रष्टव्य है-

'चोर, लुटेरे, अपहर्ता, आतंकवादियों का सुराज हैं।
चारों ओर निरंकुशता है अस्त-व्यस्त सारा समाज है।'

व्यंग्य की तीखी मार से यथार्थ जीवन्त हो उठा है-

'आरक्षण खा गया योग्यता, हुआ मुआमन पोथी पढ़कर।
बहते-बहते ठहर गया जल.'

भाषा पर कविवर का पूरा अधिकार है. कवि का कथन-'मुझे पिंगल का ज्ञान नहीं है, मात्राओं की गणना करना मुझे नहीं आता' विनम्रता ही दर्शाता है. छन्द-भंग, काव्य-दोष आदि कहीं नहीं दिखलाई देते. मन के भावों को कागज पर उकेरने में कविवर सिद्धहस्त हैं. हृदय में जन्मित भावी आशंकाए निर्मूल नहीं हैं-

'सागर से लहरें उबलेंगी, नभ से बरसेंगी ज्वालाएं।
महाप्रलय का तांडव होगा, नदियां छोड़ेगी सीमाएं।

वस्तुतः कवि दुरवस्था का समाधान चाहता है. लोक को सजग करना, जन-जन के हृदय को संवेदित बनाना सच्चा कवि कर्म है जिसके लिये कवि का प्रयास स्तुत्य हैं. संस्कृति की शाश्वता के प्रति अनुराग, दुराचरण के प्रति विराग तथा सत्य को स्वीकार करने का साहस कविता के माध्यम से जगेगा, ऐसा प्रतीत होता है. अस्तु, पुस्तक सर्व प्रकारेण वरेण्य है. निःसंदेह पुस्तक के माध्यम से कवि के युग विद्रोही स्वर को मान्यता मिलेगी तथा हर स्तर के पाठक को इसमें सार्थकता दर्शित होगी. मुख-पृष्ठ की साज-सज्जा, मुद्रणादि आकर्षक है. कविवर का संदेश उनके काव्य को प्रयोजननिष्ठ बना रहा है, यह सुखद है-

'तुम अपनी रक्षा आप करो, ईश्वर पर दृढ़ विश्वास करो,
कापुरुष न होंगे जब नेता वह दिन आये अरदास करों.'

आशा है, समीक्ष्य कृति काव्य जगत में समादृत होगी.

समीक्षक-डॉ० दाऊ दयाल गुप्ता
कृतिकारः हितेश कुमार शर्मा
प्रकाशक-हरिगंगा प्रकाशन
मूल्यः ३००रुपये मात्र

पर्यावरण पर केन्द्रित पत्रिका 'पर्यावरण डाइजेस्ट

समन्वय प्रकाशन द्वारा १९८७ से निरन्तर प्रकाशित हिन्दी मासिक पत्रिका पर्यावरण डाइजेस्ट पर्यावरण पर मुख्य रूप से केन्द्रित एक अच्छी पत्रिका है. डॉ० खुशहाल सिंह पुरोहित के कुशल संपादकत्व में १९, पत्रकार कॉलोनी, रतलाम, मध्य प्रदेश से प्रकाशित इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता शुल्क मात्र १५०रुपये हैं. इसके प्रत्येक अंक में पर्यावरण से सम्बन्धित ज्ञानपयोगी, संग्रहणीय, लेख व रचनाओं की इसमें अधिकता रहती हैं. अगर पर्यावरण क्षेत्र में आप कार्य कर रहे हैं या इससे सम्बन्धित जानकारी रखने के इच्छुक पाठक है तो पर्यावरण डाइजेस्ट इस कार्य में आपकी भरपूर मदद कर सकता है. वैसे भी पर्यावरण एक देशव्यापी ही नहीं विश्वव्यापी समस्या बनकर उभरी हैं. पूरे विश्व के वैज्ञानिक इस पर कार्य कर रहे हैं. ऐसे में विषय विशेष पर केन्द्रित पत्रिका का निकालना व सफल संचालन करना अपने आप में दुरुह कार्य हैं. इस कार्य के लिए डॉ० खुशहाल सिंह पुरोहित जी को हार्दिक बधाई.